फोन नं० २८१६

...दीप

... Hindi Daily VARANASI

... एवं निर्भीक लोकप्रिय हिन्दी दैनिक तथा साप्ताहिक]

...ए ३, दि० ७ मई, १९६६ ई० [मूल्य १० पैसे

समुद्र में दीवार

मंगलौर, ...

मंगलौर बन्दरगाह में कल मंगलौर से कुछ दूर ...पान... समुद्र में दीवार बनाने की योजना का शिलान्यास किया ...

मंगलौर बन्दरगाह योजना पर लगभग २७ करोड़ ... का अनुमान है। इसमें ७ करोड़ रुपये कंक्रीट की दो ... बनाने पर खर्च किये जायेंगे। जो समुद्र में लगभग १२ ... की लम्बाई तक बनेंगी।

यह बन्दरगाह १९७० तक बनकर तैयार हो जाय... हर वर्ष ४० लाख टन खनिज लोहा विदेशों को भेजा जा...

यह योजना बगैर किसी विदेशी सहायता या विशेष... पूरी की जाएगी।

... के मामलों में ... कश्मीर सरकार ...न में फैसला

...दिल्ली, ६ मई। आज ...यालय ... संविधान बैञ्च ...ठ) ने ...मू-कश्मीर हाई ... ...ले के खिलाफ ...की ...करली जिसमें भूत- ...त्री श्री बख्शी गुलाम ...तरफ (भ्रष्टाचार के) ...जांच के लिये नियुक्त ...मीशन की कार्रवाई ... कर दी गई थी।

...न्यायालय ने एक रायसे ... जांच कि कमीशन जम्मू- ...य के मुख्य मन्त्री श्री ...ह मन्त्री श्री धर ने ...ना के कारण नियुक्त नहीं ... यह फैसला चीफ जस्टिस ... ने सुनाया।

...स्तर—जगदलपुर सामू- ...कांग्रह के लिये पाण्डेय ...

सफल अमरीकी यात्राके ... मेहता नई दिल्ली रवाना

अमेरिका भारत का समस्याओंसे भलीभाँति ...

किसी भी तरह का दबाव डाले जाने का मेहता द्वारा खण्ड...

वाशिंगटन, ६ मई। योजना मन्त्री श्री अशोक मेहता ने भारत के आर्थिक विकास में अमेरिकी सहायता की सम्भावनाओं के बारे में कल यहां तीसरे पहर ह्वाइट हाउस में राष्ट्रपति जानसन से दुबारा भेंट कर और आगे विचार विमर्श किया। श्री मेहता आज नई दिल्ली रवाना हो गये है।

इसके पूर्व श्री मेहता ने अमेरिकी विदेश मन्त्री श्री डीन रस्क से भी भेट की। दोनों नेताओं में लगभग दो घण्टे त... सद्भावपूर्ण वातावरण में बातचीत चली। वार्ता के बाद श्री अशोक मेहता ने पत्रकारों को बताया कि वार्ता काफी सन्तोषजनक रही और आशा है कि मेरे स्वदेश रवाना होने के पूर्व कुछ तय ...

... जाने वाली सहायता की राशि नहीं बताई है।

अमेरिकी मच्छर की भनभनाहट

भारत को सूचना देकर पाकिस्तान को सैनिक सहायता दी जायेगी

वाशिंगटन, ६ मई। ज्ञात ...

मुख्यमन्त्री ... अपील सर्वो... लय द्वारा ...

नई दिल्ली, ... न्यायालय ने पश्चिम... [मन्त्री श्रीप्रफुल्लचन्द्र... हाई कोर्ट के उस ... अपील करने की ... जिसमें श्री सेन को ... मर्यादा भंग करने ...

...यपाल द्वारा ... सहकारी
...चार सदस्य ... पित

लखनऊ, ६ मई। उत्तर...
...उत्तरपाल श्री विश्वनाथ दास ने
...नियर' के सम्पादक श्री एस०
... घोष, श्री रामचन्द्र गुप्ता,
...राजाराम शास्त्री और श्रीमती
...री को राज्य विधान परिषद का
...नामांकित किया है।
...उक्त नव नामांकित सदस्य
...शपथ ग्रहण कर रहे हैं।

...अमेरिका में सरकार तथा अन्य नेताओं के साथ अपनी बातचीत पर टिप्पणी करते हुए आपने कहा कि यहां पर भारत की समस्याओं ... नहीं होती।

विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि अमेरिका ने योजना मन्त्री श्री अशोक मेहता को आश्वासन दिया है कि वह भारत की चौथी योजना के लिए आवश्यक सहायता देने के लिए तैयार है लेकिन इस वर्ष दी...

...रिका पाकिस्तान को सैनिक सहायता देने के सम्बन्ध में अपनी नीति में कोई परिवर्तन करना चाहेगा तो वह भारत को पूर्व सूचना दे देगा।

पत्रों के उन खबरों... रिका से स्पष्टीक... वह पाकिस्तान को... फिर से शुरू कर... घातक हथियार... कर रहा है।

चाय उत्पाद... नया रेकार्ड

कलकत्ता, ६ म...
१९६४–६५ में ३७...
किलोग्राम से अधिक...
उत्पादन हुआ। चाय...
यह नया रेकार्ड है...
वर्ष के उत्पादन से ल...
६० लाख किलोग्राम...
१९६४–६५ में ल...
२८ करोड़ रु० मूल्य...
विदेशों को निर्यात की...

...वर्ण नियन्त्रण आदेश पर पुनर्विचार होगा

वित्तमन्त्री श्री शचीन्द्र चौधरी की लोकसभा में घोषणा

...दिल्ली, ६ मई। वित्तमन्त्री ...न्द्र चौधरी ने कल लोकसभा ...सन दिया कि सरकार इसपर ...ार करेगी कि स्वर्ण नियन्त्रण ...ादेश को रद्द किया जा ... अथवा नहीं। साथ ही ...ी ने यह स्पष्ट कर दिया कि ...श को जारी रखने के पक्ष... असफल रहा है। उन्होंने कहा कि इस आदेश का उद्देश्य सिर्फ सोने की तस्करी रोकना ही नहीं था। उन्होंने कहा कि वास्तविक उद्देश्य थे करों की चोरी कर काले धन से सोना खरीदने पर रोक लगाना तथा सोने के प्रति लोगों में मोह कम करना।

...र्ण-नियन्त्रण आदेश पर ...ने के लिए एक समिति ...ा की मांग की जाने पर ...ने कहा कि यदि इसकी ...ा समझी गई तो ऐसा ...गा। उन्होंने कोई स्पष्ट ...देने से पहले मन्त्रिमण्डल ...ाथियों से विचार-विमर्श ...रूरत की ओर भी ध्यान ...

श्री चौधरी सदन में वित्त विधेयक पर हो रही बहस के तीसरे वाचन का उत्तर दे रहे थे। उनका सुनने के बाद सदन ने ध्वनिमत से वित्त विधेयक पारित कर १९६६–६७ के केन्द्रीय बजट को स्वीकृति दे दी।

...धरी ने ...

स्वर्ण नियन्त्रण तत्काल हटाने की संसद सदस्यों की मांग

इसके पूर्व संसद के १४ सदस्यों ...

वक्तव्य में कहा गया... ३८ महीनों में इस आदे... न्नय से इस बात का सं... है कि न तो सोने का त... ही रुका है और न ही सं... में कमी हुई है। इत... लोगों के पास से जमा... नहीं निकल सका है।

इस आदेश से दे... लाख स्वर्णकार प्रभावित... तथा वे बेरोजगार हो गए...

वक्तव्य में आगे बताय... कि हमारी दृढ़ राय है वि... को स्वर्ण नियन्त्रण के बारे... नीति पर पुनर्विचार करना...

वक्तव्य पर हस्ताक्षरक... श्री एस०एम० बनर्जी, श्री...

सहितान् सर्व विषयान् सेवमानोऽपि मानवः।
देहान्ते मुक्तिमाप्नोति नात्र कार्य्या विचारणा ॥
इति शिवगीता प्रमाणं।

दुरन्त घोर कलि युग में पतित पावनी अविमुक्त वाराणसी पुण्य पूरी की सेवा भिन्न ज्ञान लाभ का अन्य उपाय नहीं है। क्योंकि सम्पूर्ण त्यागी होकर सन्यास धर्म्मावलम्बन करने से भी कलियुग में ज्ञान का लाभ नहीं होता है। इसी कारण से कलियुग में सन्यास धर्म अवलम्बन करना शास्त्रों में निषेध किया है। किन्तु स्त्री पुत्र कुटुम्बादि समस्त परिवारों के सहित ज्ञान देनेवाली काशी के चरण का आश्रय करके समस्त विषयानन्द भोग करने से भी देहान्त में ब्रह्मानन्द रूप निर्वाण मुक्ति प्राप्ति होती है। पाप पुण्य कर्म फल भोग करने के लिये दूसरा जन्म नहीं होता है॥

यथा लौहं स्पर्श मणौ पतितं कनकं भवेत्।
तथा काश्यां ब्रह्मरूपं प्राप्नुयात्पतितं जगत्॥

जैसा पारस मणि का स्पर्श होतेही अत्यन्त मलिन लोहा निर्मल कांचन हो जाता है। वैसाही शुक्र शोणित से उत्पन्न मल मूत्र का आकर अत्यन्त मलिन देह काशी में नाश होतेही देहाभिमानी मलिन वासनायुक्त जीवात्मा निर्मल ज्योतिमय परमात्मा परम ब्रह्म स्वरूप हो जाता है।

अहो वाराणसी धन्या यत्र सन्निहितः शिवः।
सर्वेषां यत्र पापानां प्रवेशोऽपि नविद्यते ॥
न पापेभ्यो भयं तत्र नभयं तत्र वै यमात्।
न गर्भ वास भी र्यत्र तत्क्षेत्रं को न सेवते ॥

अहो वाराणसी पूरी धन्य है। जहां कि ज्ञानदाता करुणा सागर विश्वेश्वर विराजमान हैं और जहां कोइ पाप प्रवेश नही करसक्ता, जहां धर्माधर्म विचार कर्त्ता यमराज का अधिकार नहीं है, और जहां प्राण वियोग होने से मातृ गर्भ वास अकथनीय दुःख निवृत्त हो जाता है ऐसे वाराणसी क्षेत्र की सेवा कौन नहीं चाहता है॥

सूच्यग्र मात्र मपि नास्ति ममास्य देशेस्मिन् ।
स्थानं सुरेश्वरि मृतस्य नयत्र मोक्षः ॥
भूमौ जले वियति वाऽशुचि मध्यतः वा ।
सर्पाग्नि दस्युपरिभि र्निहतस्य जन्तोः ॥
स्त्रिग्ध काश्यामिहैवैका मति श्चाद्य मयाश्रुता ।
अत्रैव मृत मात्राणां तिरश्चामपि देहिनां ॥
भक्ता नामप्यभक्तानां पुण्यपापाश्रनामपि ।
मुक्तिं दास्यामि सर्वेषां भक्ता ना मेव सैवहि ॥

हे सुरेश्वरि मेरे इस पंच कोश अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र के मध्य में सूच्यग्र मात्र भी ऐसा कोई स्थान नहीं जहां कि देहान्त होने से मोक्ष नहीं होता है। भूमि जल आकाश अथवा अपवित्र स्थान में सर्प से काटे हुए अग्नि से दग्ध हुए दुरात्मा से मारे हुए पुण्यात्मा भक्त और पापात्मा अभक्त समस्त प्राणियों को अपने भक्तों की नाई देहान्त होते ही मुक्ति देता हूं यह मेरी प्रतिज्ञा है।

गणयति नकथं चिच्छंकरः काशिकाया
मयमिह मम भक्तो ब्राह्मणः पुक्कशोवा ॥
उपदिशति सदास्मै वाक्य मेकान्त निष्ठं ।
द्विज कुल निरपेक्षं भावतेऽत्राधिकारः ॥
इति पद्म पुराणे काशी माहात्म्ये २ अध्याये ।

समदर्शी सच्चिदानन्द परमात्मा स्वरूप शंकर महादेव इस काशी क्षेत्र में निज भक्त ब्राह्मण वा चाण्डाल समस्त प्राणियों को एकही प्रकार से अविशेष करके महावाक्य का उपदेश करते हैं कदापि द्विज कुल की अपेक्षा नहीं करते हैं। तात्पर्य यह है कि ब्राह्मण भिन्न शूद्रादि वर्णों को बेदोक्त महावाक्यों में अधिकार नहीं है किन्तु सदा शिव के अनुग्रह से काशी में समस्त प्राणियों को अधिकार है।

अधिक क्या कहना है इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र में विद्या तुरूपा, ज्ञानरत्न विभूषिता, नित्यानन्द प्रदा, निर्वाण मुक्ति रूप युवती गली गली भ्रमण करती है। वह जाति कुल, रूप गुण, वर्णाश्रम, वर्णावस्था सद्गति दुर्गति, चोर साधु, धनी भिक्षु, राजा प्रजा, योगी भोगी, रोगी अरोगी, इत्यादि का विचार नहीं करती है, पशु पक्षी, कीट पतंग प्रभृति समस्त प्राणियों के प्राण वियोग समय मे अपने बल से पकड़ कर अपने राज मे अभिषेक कर देती है।

काशयां सुखेन कैवल्यं यथा लभ्येत जन्तुभिः।
योगयुक्त्याद्युपायैश्च नतथान्यत्र कुत्र चित्॥

काशी वासी जीवों को जैसे सुख से अनायास मुक्ति प्राप्ति होती है, अनेक जन्म मे कष्ट साध्य योगानुष्ठान करने से अथवा दुसरे उपायां से और किसी स्थान मे ऐसे सुख से मोक्ष का लाभ नहीं होता है।

कलिः कालः कृतं कर्म त्रिकंटक मितीरितम्।
एतत्त्रयं न प्रभवेदानन्द वन वासिनाम्॥

कलि, काल, और किया हुआ कर्म ये तीनों संसार के कांटक स्वरूप हैं। परन्तु आनन्द कानन वासी जीव गणों के ऊपर ये तीनों कंटक कदापि अपने प्रभाव का विस्तार नहीं कर सक्ते।

उक्त प्रकार से श्रुति, स्मृति, और पुराणादि मे काशी मरनेवाले प्राणियों को जो मोक्ष लिखा है सो उस विषय मे लोग भिन्न भिन्न श्रुति इत्यादि शास्त्रों के अन्य अन्य प्रमाणों से एवं नाना प्रकार की पृथक् पृथक् बुद्धि से अनेक प्रकार का विकल्प करते हैं। अनभिज्ञ लोग कहते हैं कि काशी मे प्राण वियोग होने से दृश्यमान पाषाणमय शिव लिंग होकर कर्म्मानुसार उत्तम और अधम स्थान मे स्थापित हो कर कर्म्मानुसार उत्तम अधम भाव से सेवे जाते हैं, शास्त्र जाननेवाले पण्डितों के मध्य मे कोई कोई सालोक्यादि मुक्ति को अंगिकार करते हैं, और कोई कहते हैं कि, माभुक्तं क्षीयते कर्म्म कल्प कोटि शतैरपि। अवश्य मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म्म शुभा शुभम् अर्थात् किये हुए कर्मों के फल भोग बिना शत कोटि कल्प काल मे भी नाश नहीं होता है, अवश्य करके

किये हुये कर्मों के फल भोगे ही जाते हैं कर्मों हीं को प्रबल करके मानते हैं। कितने कहते हैं कि वाराणस्यां कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति। यथा पुण्य कृत मक्षयंस्यात्तथाच पापं न तयों विशेषः।

काशी में किया हुआ पाप वज्रलेप के तुल्य हो जाता है। जैसा काशी में किये हुये पुण्य कर्मों का क्षय नहीं होता तैसाही किये हुये पाप कर्मों का भी क्षय नहीं होता है इस प्रमाण से पापात्मा की मुक्ति नहीं होती है केवल पुण्यात्माओं के देहान्त मात्रही में मुक्ति होती है। यथा शिवपुराणोत्तर खण्डे

प्रायश्चित्तं विना येषां पापं काश्यां समुद्गतं।
त्रिंशद्वर्ष सहस्राणि तेषां पैशाचिकीगतिः॥
शिवोपदेशात्तस्मान्ते मुक्ति रेव न संशयः॥ इति शि०

शिव पुराण के उत्तर खण्ड में लिखा है कि काशी में किये हुए पापों के प्रायश्चित्त विना देहान्त होने से जीव तीस हजार वर्ष पिशाच योनि में वास करके पाप कर्म्म के फल भोग के अनन्तर शिव जी के उपदेश से मुक्त हो जाता है इस में संशय नहीं है।

इन प्रमाणों से प्रायः समस्त लोग संशय विपर्य्ययरूपी तिमिर से आच्छन्न होकर काशी मोक्ष मार्ग का निर्णय नहीं कर सक्ते हैं, इसलिये श्रुति और स्मृति के प्रमाणों से विरोधी प्रमाणों को अविरोधी अर्थ समाधान करके परम कृपालु वार्तिककार परमहंस परिव्राजक श्रीमत्सुरेश्वराचार्य्य ज्ञानदीपकरूपी काशी मोक्ष विवेकनामक एक ग्रन्थ बनाय करके परम धाम को गमन किया है, किन्तु उक्त ग्रन्थ संस्कृत रचना एवं श्रुतियों के गूढ़ार्थ अत्यन्त कठिन साधारणों को बोध गम्यहोना दुस्साध्य है इसलिये अनेक अनेक प्राचीन ग्रन्थों के मर्मानुसार भाषानुवाद करके देशहितैषी मोक्ष चाहनेवाले परोपकारी धर्म्मात्मा महोदय गणों को निवेदन करताहूँ, कि अल्पबुद्धि दीन हीन भाषानुवाद करने वाले के ऊपर कृपावलोकन पूर्वक असंगत अर्थ और वर्ण विपर्य्यय दोषों को परिहार करके साध्यानुसार साहाय्य और उत्साह प्रदान करके कृतार्थ करें।

श्रीमथुरामोहन मुखोपाध्याय।

काशीमोक्ष विवेक।

काशी-मोक्ष निर्णय प्रारम्भ।

नमस्कृत्य जगन्नाथं मायया चन्द्रशेखरम्।
गंगाधरं गरच्छाया नीलकंठ मुपास्महे ॥ १ ॥

प्रपंच जगत के कारण एक अद्वैत अखण्ड चिदानन्द स्वरूप निराकार निरञ्जन ब्रह्म अपनी माया से जगत का सृजन पालन औ संहार करते हैं। इस लिये शास्त्रों में जगन्नाथ नाम से प्रसिद्ध है। जो अपनी माया से साकार हो कर ललाट में सुधाकर चन्द्रमा को धारण करके चन्द्रशेखर नाम से विख्यात है। जो तीनों लोकों को तारनेवाली और पापियों को पवित्र करनेवाली गंगाजी को जटा में धारण करके कैलाश शिखर में गंगाधर नाम से विराजमान है। और जो समस्त प्राणियों की रक्षा के लिये समुद्र मथन समय में हलाहल विष को पीकर कण्ठ में नीलवर्ण गरल चिन्ह धारण करके नीलकण्ठ नाम से सर्वलोक में पूज्य है ऐसे जगन्नाथ चन्द्रशेखर गंगाधर नीलकण्ठ महादेव के चरणों को नमस्कार करके उपासना करताहूँ ॥ १ ॥

नीलकण्ठ शब्द का दूसरा अर्थ लिखा जाता है।

परंब्रह्म के एक देश में तमो रुपा परमा शक्ति माया का प्रकाश हेत कैवल्य श्रुति में नीलकण्ठ कहे है ॥

वाराणसीपुरीं पुण्यां येऽधितिष्ठन्ति जन्तवः।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म रुद्र स्तेषां दया निधिः ॥ २ ॥

वाराणसी पुण्य पूरी में जो प्राणी वास करते हैं दया के सागर रुद्र उन सभों को तारक ब्रह्म महा मंत्र उपदेश करते हैं ॥ २ ॥

प्राण प्रयाण समये प्राप्य ज्ञानं महेश्वरात।
मुच्यन्ते जन्तवः सर्वे बद्धाः स्वाभाव्य विद्यया ॥ ३ ॥

तत्वज्ञान रहित मोहान्ध जीव गण जो मूल अज्ञान रूपी अविद्या के महा मोह पाश से बँधे हैं वे सब प्राण वियोग समय में महेश्वर से आत्म तत्व ज्ञान पाय कर मुक्त हो जाते हैं। ३ ॥

मोक्षश्च तेषां तादात्म्यं घटेतर खयोरिव।
पुनर्देहान्तरारम्भे कारणं नास्ति किञ्चन ॥ ४ ॥

शिव जी के उपदेश से काशी मरनेवाले प्राणियों को जिस प्रकार मुक्ति होती है, सो लिखा जाता है।

जैसे घट नाश होतेही घट मध्यस्थ आकाश महाकाश में मिल जाता है, तैसे काशी में शरीर नाश होते ही देहस्थ जीव चैतन्य ब्रह्म चैतन्य में मिल जाता है, पुनर्वार शरीर उत्पन्न होने का कारण नहीं रहता है, जैसा घटाकाश महाकाश एकही आकाश है केवल उपाधि मात्र भेद है उपाधि नाश होने से एकही हो जाता है, तैसाही ब्रह्म चैतन्य और जीव चैतन्य एकही चैतन्य हैं केवल अविद्या मात्र उपाधि भेद है उपाधि नाश होतेही अभिन्न हो जाता है। ४।

कोई कहै कि यद पि शरीर नाश होतेही घटाकाश की नांई जीव चैतन्य ब्रह्म चैतन्य में मिल जाता है तो काशी में मरने से क्या इष्ट है। इस का उत्तर यह है।

समस्त जीवों के स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीनों प्रकार के शरीर होते हैं, पंचीकृत पंचमहामहाभूतों से बना हुआ जोकि कर्म्म से उत्पन्न सुख और दुःख के भोग का घर, रहना, उत्पन्न होना, बढ़ना, बदलना, क्षीण होना, नाश होना, इन छवों विकारों से युक्त अस्थि चर्म, रक्त मांस, मिलित जो वस्तु सो स्थूल शरीर है। अपंचीकृत पंच महाभूतों से उत्पन्न होकर कर्म्म से उत्पन्न सुख दुःखादि भोग का साधन, पंचज्ञानेन्द्रिय पंच कर्म्मेन्द्रिय प्राणादि पंच वायु और मन बुद्धि इन सत्रह कलाओं के साथ जो रहता है सो सूक्ष्म शरीर है। अकथनीय अनादि अविद्यास्वरूप मूल अज्ञान जो दोनों शरीर का कारण है सो कारण शरीर है। जिस काल पर्य्यन्त आत्मतत्व तारक ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति नहीं

होती है, तिस काल पर्य्यन्त अनादि अज्ञान रूपी कारण और सूक्ष्म शरीर का नाश नहीं होता है, केवल स्थूल शरीर का नाश होता है. परन्तु काशी में ज्ञान दाता शिव गुरु विश्वनाथ की कृपा से आत्मतत्त्व तारक ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होते ही दोनों शरीरों का कारण मूल अज्ञान रूपी कारण शरीर का नाश हो जाता है, इसलिये दूसरे बार शरीर उत्पन्न होने का कारण नहीं रहता पंचदशी के तत्त्व विवेक में लिखा है कि तत्त्व जाननेवाले गुरु से साक्षात् आत्म तत्त्व ज्ञान के उपदेश से संसार का कारण मूल अज्ञान का नाश हो जाता है जैसा सूर्य्य उदय होने से अन्धकार का नाश हो जाता है।

सालोक्यादिर्न विद्वद्भिः साक्षान्मोक्षत्व मिष्यते।
उपास्तेः पररूपत्वात्तारतम्यपदस्थितेः ॥ ५ ॥

अनेक जन्म में योगादि साधन करके प्रत्यक्ष आत्म तत्त्व ज्ञानियों को जो निर्वाण मुक्ति लाभ होती है, सो काशीवासी समस्त प्राणियों के देहान्त समय में शिवदत्त ज्ञान से विनाश्रम अनायास से प्राप्ति होती है अर्थात् प्रत्यक्ष आत्म तत्त्व ज्ञानियों की नाईं विदेह कैवल्य रूप निर्वाण मुक्ति होती है। उपासकों की नाईं सालोक्यादि तीन प्रकार की मुक्ति नहीं होती है, क्योंकि उपासना के भेद से यह तीन प्रकार की मुक्ति अर्थात् उसी लोक में वास वही रूप प्राप्ति, और उन्ही की सेवा, इस प्रकार भिन्न भिन्न मुक्ति उपासना करनेवाले को होती हैं काशी मरनेवाले प्राणियों को ब्रह्मात्मता रूप परम आनन्द प्राप्त होता है।

ज्ञानाग्निना विनष्टत्वादश्लेषः पूर्वकर्मणाम्।
उत्तरेषां नविश्लेषो भवेन्मुक्तस्य जीवतः ॥ ६ ॥
प्रारब्ध कर्म्म भोगेन क्षीयतेऽज्ञान कारणं।
ततो विदेह कैवल्यं भवतीति सुनिश्चितं ॥ ७ ॥

मा भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि, इस प्रमाण से कर्मों के भोग विना किस प्रकार से ज्ञानियों की निर्वाण मुक्ति हो सक्ती है। इस का समाधान इस प्रकार से है।

कर्म तो तीन प्रकार के हैं अर्थात् आगामि, सञ्चित, और प्रारब्ध, ज्ञान

उत्पन्न होने के अनन्तर ज्ञानों के शरीर से किये हुए पुण्य और पाप को आगामि कर्म्म कहते हैं। अनन्त कोटि जन्म के बीजरूपी पूर्व जन्म के किये हुये कर्म्म समूहों को सञ्चित कर्म कहते हैं। इस शरीर को उत्पन्न करके इसी लोक में सुख दुःख देनेवाले कर्म को प्रारब्ध कर्म कहते हैं यह कर्म भोग विना नष्ट नहीं होता है, इसी से श्रुति आदि शास्त्रों में कहे हैं कि प्रारब्ध कर्म्म का नाश भोगही से होता है और किसी प्रकार से नाश नहीं होता है। ज्ञान होने के पूर्व अर्थात् अज्ञान अवस्था में किये हुए पाप पुण्य सञ्चित समस्त कर्म्म ज्ञानाग्नि में भस्म हो जाते हैं, ज्ञान होने के पीछे जीवन्मुक्त अवस्था में ज्ञानी लोग शरीर के किये हुए कर्म्म में लिप्त नहीं होते, जैसा घटाकाश अर्थात् घट के भीतर का आकाश सुगन्ध में लिप्त नहीं होता है तैसाही ज्ञानी पुरुष शरीर कृत कर्म्म में लिप्त नहीं होतेहैं जैसा स्वप्न अवस्था में किया हुआ समस्त कर्म जाग्रत अवस्था में मिथ्या हो जाता है तैसेही अज्ञान अवस्था के किये हुए ज्ञानी के समस्त कर्म स्वप्न तुल्य मिथ्या हो जाते हैं। अज्ञान कारण प्रारब्ध कर्म भोग से क्षय हो जाता है इन तीनों प्रकार के कर्मों के अभाव से ज्ञानियों के शरीर नाश होतेही विदेह कैवल्य रूप निर्वाण मुक्ति अवश्य करके निश्चित है।

काश्यां विदेह कैवल्यं भवतीति सुनिश्चितम्।
काश्यां विदेह कैवल्यं प्राप्ते ह्युत्तर कर्म्मणाम्॥
असम्भवान्न विश्लेषो वेदितव्य विचक्षणैः॥ ८॥

काशी मरनेवाले प्राणियों के प्रारब्ध कर्म भोग से क्षय होने के अन्तर देहान्त समय में महेश्वर से ज्ञान प्राप्ति होतेही सञ्चित कर्म का नाश हो जाता है देहान्त के पश्चात् उत्तर कर्म अर्थात् आगामि कर्म का सम्भव नहीं क्योंकि विन शरीर कर्म्म नहीं हो सक्ता इसलिये काशी मरने वाले जीवों को विदेह कैवल्य रूप निर्वाण मुक्ति निश्चित हैं। और विदेह रूप निर्वाण मुक्ति होने से उत्तर कर्म्म का असंभव है तो उस कर्म में लिप्त होना भी असंभव है सो विचक्षण लोग जानें॥

। किमत्र प्रमाणं श्रूयतेहि ।
तद्यथेषीका तूल मग्नौ प्रोतं प्रदूयेत ।
एवं हास्य सर्व्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते इति ॥ ९ ।

ज्ञानियों को ज्ञान प्राप्त होने के पूर्व और उत्तर कर्म्म का नाश हो जाता है जो आगे कहे हैं सो प्रमाण सिद्ध है कि नहीं इसलिये श्रुति प्रमाण कहते हैं। जैसा सरपत का फूल और रूइ अग्नि स्पर्श होतेही भस्म हो जाते हैं तैसाही ज्ञानियों के समस्त पाप कर्म ज्ञानाग्नि मे भस्म हो जाते हैं ॥

तर्हि पापकर्म्मणामेव विलयः श्रूयते
न पुण्य कर्म्मणामितिचेन्नेत्याह । ब्रह्मादीनां
शरीराणि श्वशूकर शरीरवत । यतो जिह्वा सिता
न्येव तस्माद्धर्म्मेऽपि पापमनि रिति वचनात
पुण्य कर्म्मारब्धानां ब्रह्मेन्द्र शरीराणां पाप
कर्म्मारब्ध शरीरादि वज्जिह्वा सितत्वाऽविशेषात
पुण्यस्यापि कर्म्मणः पाप्मत्वेन कीर्त्तनं युक्तं ।
तथाच भगवता स्मर्य्यते । यथैधांसि समिद्धोग्नि
र्भस्मसात् कुरुतेऽर्ज्जुन । ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि
भस्मसात् कुरुते तथा ॥ १० ।

कोई कहे कि इस प्रमाण से पापकर्म्मही का नाश होता है, पुण्य कर्म का नहीं, इस कारण से दूसरा श्रुति प्रमाण कहते है। ब्रह्मा आदि देवतों के शरीर शूकरादि शरीर के समान निन्दित हैं, इसलिये मोक्ष धर्म मे पुण्य कर्म्म को भी पाप कर्म्म के समान करके श्रुति मे लिखा है क्योंकि पुण्य कर्म से उत्पन्न ब्रह्मा और इन्द्रादि देवतों के शरीर और पाप कर्म से उत्पन्न शूकरादि पशुयों के शरीर तुल्यही है क्योंकि पाप पुण्य उभय कार्मही संसार बन्ध का कारण है जैसे सोने की शृंखला और लोहे की शृंखला दोनो से बन्ध का कारण है तैसाही पुण्य और पाप दोनो कर्म्म संसार बन्ध के कारण है इसलिये

पाप नाश शब्द का अर्थ पाप पुण्य उभय कर्म का नाश तथापि भगवद्वाक्य स्मरण करते है, यथा हे अर्जुन जैसा जलती हुए अग्नि मे समस्त काष्ठ भस्म हो जाता है तैसाहि ज्ञानाग्नि मे समस्त कर्म्म भस्म हो जाते हैं ॥

यच्चोक्तं जीवन्मुक्तस्य ज्ञानोत्तर कालिन
कर्म्मणां विशेषो न भवतीति । तचेदं प्रमाणं ।
यथा पुष्कर पलाश आपोन शिष्यंते एवं हैवं
विदिं पापं कर्म्म नशिष्यते इति ॥ १२ ।

ज्ञान प्राप्त होने के अनन्तर जीवन्मुक्त पुरुष किसी कर्म मे लिप्त नहीं होते हैं, जो आगे लिखा है सो श्रुति प्रमाण कहते हैं । जैसा कमल पत्र मे जल नही लिप्त होता है, तैसाही ज्ञानी पुरुष कर्म मे नहीं लिप्त होते ॥

प्रारव्धस्यच कर्मणः कर्म्मत्वाऽविशेषात
ज्ञानेन वाध्यत्व मुपपद्यंते इति चेन्नेत्याह ॥
प्रारब्धस्योप जीवत्वा त्तत्त्व ज्ञानेन कर्म्मणः
अशक्यत्वाच्च मुक्तेर्षोऽस्य वाधो न विद्यते इति
वचनात ॥ १३ ।

कोइ कहे कि जद्यपि कर्म का विशेष नही है, तो ज्ञानाग्निमे प्रारब्ध कर्म का भी नाश हो जाता है, सो नही; क्योंकि प्रारब्ध कर्म इसी शरीर को उत्पन्न करके इसी लोक मे सुख दुःखादि का भोग कराता है परन्तु मुक्ति का विरोधी नही है, ज्ञान से प्रारब्ध कर्म का नाश होने से श्रुतियों के लिखे हुए जीवन्मुक्त वाक्य मिथ्या हो जाते है, क्योंकि प्रारब्ध कर्म का नाश होतेही शरीर का भी नाश हो जाता है, शरीर नाश होने के अनन्तर जीवन्मुक्त क्योंकर हो सक्ता है, वेदान्त मे स्पष्ट लिखा है कि ज्ञान होने के पश्चात् जीवन्मुक्त पुरुष इच्छा अनिच्छा परेच्छा इन तिनों प्रकार प्रारब्ध कर्म्म के फल का भोग करके देहान्त के अनन्तर विदेह कैवल्य रूप निर्वाण मुक्ति प्राप्ति होतीहै भोग के विना प्रारब्ध कर्म्म का नाश नही हो सक्ता है ।

अपहि जन्तोः प्राणैरुत्क्रमप्रमाणस्य रुद्रस्तारकं ब्रह्मव्याचष्टे। अयविमुक्त हि प्रसिद्धौ जन्तोरस्तुर्विधस्य जीव जातस्य प्राणै रुत्क्राम्यमाणस्य प्राणैरुत्क्रान्त कुर्व्वतः प्राणैरुत्क्रम्यमाण(स्य)ति केचित् पठन्ति। रुद्रस्तापचयात्मकं संसार दुःखं रुत् दुःख हेतुर्वा रुत् रुद्रं द्रावयतीति रुद्रः। रुद् दुःखंदुःख हेतुर्वा द्रावयत्येषनः प्रभुः। रुद्र इत्युच्यते सद्भिः शिवः परम कारण मितिस्मृतेः। अशुभं द्रावयन् रुद्रो यज्जहार पुनर्भवं ततः स्मृताभिधौरुद्रशब्दे नाचा भिधीयते इतिच। रुत्यावेद रूपया धर्म्मादीन् वोधयति वा रुद्रः। रुत्या प्रणव रूपया स्वात्मानं प्रापयतीति वा रुद्रः। रोदयमाणो द्रवति प्रविशति मर्त्यानिति वा रुद्रः त्रिधावद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यानाविवेशेति श्रुतेः। संवोधिका रोधिका वोधिकाच शक्तिः। रुतेत्वोतस्याः द्रावयिता भक्तेभ्यः इति। वा विग्रहः। रुद्रः रुत् शब्दे वेदात्मानं कल्पादौ ब्रह्मणे ददातीति वा रुद्रः॥ योवै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मा इति श्रुतिः। एवमादिभिः प्रकारैर्वहुविधा रुद्र शब्दो निरूप्यते तारकं तारकः प्रणव स्तारयतीति तारः स्वार्थकः प्रत्ययः। संसार सागराद्धुत्तारकं तारकंच तद्ब्रह्मेति ब्रह्मोच्यते ओमितिदं तद्ब्रह्मेति श्रुतेः। ओमित्येतदक्षरमिदं सर्व्वमिति श्रुतेः। ओमित्येकाक्षर ब्रह्मेति भगवान् व्याचष्टे उपदिशति। येनासावमृतो भूत्वा मोक्षी भवति येनोपदिष्टेन ज्ञाने-नासौ जन्तुरमृतो भूत्व त्वचा भूत तद्ब्रह्मेवैनं भवति, स्वतः सिद्धत्वात् अमृतोय मविद्यान्तर्हितो मर्त्यभाव मापन्नो शिष्टत्वाऽ ज्ञान तत्कार्य्यो मोक्षी भवति। मुक्तएव मुक्तोभवति ब्रह्मैवसन्

ब्रह्माप्येति। विमुक्तश्च विमुच्यते इति श्रुतेः। तस्मात्ततोहेतोरविमुक्तमेव निषेवेत। अविमुक्तं नविमुञ्चेन्नत्यजेदामरणान्तिकं। एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यो बृहस्पति ना पृष्टः सन्नेव मेव वैतद्वगन्तव्य मित्युवाच याज्ञवल्क्यः॥ १४।

. इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र मे जरायज, अण्डज, स्वेदज, और उद्भिज्ज इन चारो प्रकार के देहधारी जीव जन्तुओं के प्राण वियोग समय मे रुद्र महेश्वर आध्यात्मिक अर्थात् शरीर से उत्पन्न ताप, आधिभौतिक सर्प व्याघ्र भूत जनित ताप, आधिदैवत वृक्ष पर्व्वत औ वज्रादि पतन जन्य ये तीनों प्रकार के तापरूपी संसारिक दुःख वा दुःख के हेतुओं को नाश करनेवाले कल्याण स्वरूप सदाशिव को स्मृति मे रुद्र कहते हे। जो अशुभ कर्म्मों का नाश करके पुनर्जन्म का निवारण करता है सो रुद्र हैं, जो वेद रूपी हो कर धर्म्मादि का उपदेश करता है यह रुद्र शब्द का अर्थ है। जो तारक ब्रह्म प्रणव रूप से अपने आत्म की प्राप्ति कराय देते है वह रुद्र। मर्त्त जीव रोय २ के जिस्मे प्रवेश करते है वह रुद्र। जो कल्प के आदि मे ब्रह्मा को वेद प्रदान करता है वह रुद्र है इस प्रकार से श्रुति औ स्मृति से रुद्र शब्द का अनेक प्रकार के अर्थ लिखे हैं।

तारकं। तारक शब्द का अर्थ प्रणव रूप शब्द ब्रह्म, इस प्रणव रूप शब्द ब्रह्म ही संसार सागर से तार देते है इसलिये इन्ही को तारक ब्रह्म श्रुति मे कहे है। यथा ओमित्येकाक्षरं ब्रह्मेति श्रुती ओंकार एकाक्षर ब्रह्म भगवान उपदेश करते है

यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणान् ऊर्द्ध मुत्क्रामयति

जिसका उच्चारण करने से अर्थात् नाम लेने से प्राण ऊर्द्ध गमन करते है उन्ही को ओंकार तारक ब्रह्म कहते है, इस नादात्मक ओंकार एकाक्षर तारक ब्रह्म भगवान उपदेश करते है, जिससे जीव अमृत होकर परब्रह्म मे मिल जाता है, जैसा जल मे जल दूध मे दूध घी मे घी मिल जाता है अर्थात् जो पूर्व काल मे था सोही हो जाता है जैसा कोई पात्र का जल गंगाजी मे गिराय देने से गंगा ही हो जाता है। क्योंकि ब्रह्म और जीव एकही वस्तु

है, परन्तु केवल अज्ञान रूपी अनादि अविद्या के महा मोह से जीव भाव होती है जैसा रज्जु में सर्प और सीप में रजत का भ्रम होता है तैसाही निर्विकार ब्रह्म में अज्ञान से जीव का भ्रम होता है जैसा किसी के उपदेश से रज्जु में सर्प सीप में रजत का भ्रम मिट जाती है पूर्व स्वरूप रज्जु और सीप स्पष्ट प्रतीत होता है तैसाही शिव जी के उपदेश से भ्रमरूपी जीव भाव नाश होकर ब्रह्म भाव हो जाता है अर्थात् पूर्व काल में जो था सोही हो जाता है। इस कारण से देहान्त पर्यन्त अविमुक्त परित्याग करके अन्य क्षेत्रों में गमन करना उचित नहीं हैं, अविमुक्त वाराणसी में निवास करना उचित हैं, देव गुरु वृहस्पति से महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा हैं, ज्ञानदाता विश्वगुरु विश्वेश्वर जिस क्षेत्र का कदापि परित्याग नहीं करते है उसीं को अविमुक्त कहते है।

प्राणोत्क्रमणं न स्थावर विषय मिति चेन्नेत्याह औषधि वनस्पतयो यच्च किंच प्राण भृदिति श्रुतेः। यत् किञ्चेदं प्राणि जंगमञ्च पतत्रिं च यच्च स्थावरं सर्व्वं तत् प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठित मिति श्रुतेः। प्राणोत्क्रमणं जंगमेष्वभिव्यक्तं स्थावरेष्वनभिव्यक्तं मेतावानेव विशेषः। भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठ इति मानवं वाक्य मपि प्राणाभिव्यक्त्याभि प्रायं प्राणित्व प्रतिपादन परं। षड् भाव विकारित्वाविशेषात् प्राणित्वाविशेषात् स्थूल, सूक्ष्म, कारणोपाधिमत्वाविशेषात् जन्तु शब्दत्वाविशेषात्। संसार चक्रे भ्रामयमाणत्वाविशेषात् तथाच स्मर्य्यते श्लोकः। स्थाल्यां विपच्यमानायां यवादिनां यथैवहि। सुराणां नारकाणाञ्च तथोर्द्धाधः प्रवर्त्तनमिति अत्राविमुक्ते स्थावर जंगमाश्च सर्व्वे प्राणिनो मोक्षऽधिक्रियन्ते। सङ्कोच करणाभावात॥

कोई कहे कि स्थावर अर्थात् वृक्षादि के प्राण उत्क्रमण नहीं होते हैं इसलिये श्रुति प्रमाण लिखा जाता है। औषधि वनस्पति (वृक्षादि) समस्त प्राणधारी

अर्थात् प्राणी मध्य में गणय हैं। द्वितीय श्रुति। स्थावर जंगमादि समस्त प्राणी प्राणचल, प्रज्ञान चैतन्य से प्रतिष्ठित हैं। प्राण के उत्क्रमण अर्थात् उर्द्ध गमन जंगम में प्रकाश रूप स्थावर में अप्रकाश रूप इतनाही विशेष हैं। समस्त भूतों के मध्य में प्राणी श्रेष्ठ अर्थात् मानव श्रेष्ठ है क्योंकि प्राण का प्रकाश है, परन्तु षड्भाव विकार सब में बराबर है, प्राणी में भी अविशेष है स्थूल सूक्ष्म कारण उपाधि में कोई भेद नहीं है, और जन्तु शब्द जन्म मरण धर्म्मि उससे भी भेद नहीं एवं संसार चक्र में भ्रमण के भी कोई विशेष नहीं है इस कारण से समस्त जीव समान एव प्राण विशिष्ट, पञ्चकर्म्मेन्द्रिय पञ्चज्ञानेन्द्रिय पञ्च प्राण मन बुद्धि यह सत्र दश अवयव युक्त लिंग शरीर जीवत्व का कारण है इस के भिन्न जीवत्व नहीं होता है इसलिये जीव मात्र को प्राणी कहा है। यदि कोई कहे कि गति विशेष हैं तो सब जीव क्योंकर समान है, इसलिये श्रुति प्रमाण स्मरण करती है, जैसा पाक समय में पात्रस्थ अन्न ऊपर और नीचे आता जाता है तैसाही स्वर्गी और नारकी जीव ऊपर नीचे अर्थात् स्वर्ग नरक को गमनागमन करते है। इस अविमुक्त क्षेत्र में स्थावर जंगमादि समस्त प्राणी मोक्ष के अधिकारी हैं, इस में शंका करने का कोई कारण नहीं हैं। १४।

ओमित्येतदक्षर मिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूत भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव। यच्चान्यत् त्रिकालातीतं तदप्योङ्कार एव। सर्वं ह्येतद्ब्रह्म, अयमात्मा ब्रह्म, सोऽयमात्मा चतुष्पात्जागरित स्थानोवहिः प्रज्ञः सप्तांग एकोनविंशति मुखः स्थूलभुग वैश्वानरः प्रथमः पादः। स्वप्न स्थानोऽन्तः प्रज्ञः सप्तांग एकोन विंशति मुखः प्रविविक्त भुक् तैजसो द्वितीयः पादः। यत्र सुप्तो न कञ्चन काम कामायते न कञ्च स्वप्नं पश्यति, तत् सुषुप्तं, सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक चेतो मुखः प्राज्ञ स्तृतीयः पादः। एष सवेश्वरः, एष सर्वज्ञः, एषोऽन्तर्यामी, एष योनिः, सर्वस्य

प्रभवाप्ययौहि भूतानां, । नान्तःप्रज्ञं नवहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं नप्रज्ञं नाप्रज्ञं नप्रज्ञानघनं नघनप्रज्ञं नप्रज्ञानमदृष्टमव्यवहार्य्यं मग्राह्य मलक्षण मलिङ्ग मचिन्त्य मव्यपदेश्यमेकात्मप्रत्ययसारं प्रपंचोपशमं शान्तं शिव मद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते सआत्मास विज्ञेयः ॥

ओंकार यही अक्षर समस्त जगत् का रूप इस का वर्णन इस प्रकार से है, कि भूत भविष्यत और वर्त्तमान ये समस्त ही ओंकार के स्वरूप हैं। एतद्भिन्न तीनों काल के अतीत जो पदार्थ है सो भी ब्रह्म है, जगत् का समस्त वस्तु ही ब्रह्म है, क्योंकि देश काल अपरिछिन्न सब भूतों मे निवास करनेवाला यही आत्मा बृहत् शब्द वाच्य ब्रह्म है। इस आत्मा के चार पाद हैं, यथा जाग्रत अवस्था मे आत्मा वाह्य ज्ञानवान अर्थात् आत्मा के भिन्न शब्दस्पर्शादि वाह्य विषयों का ज्ञान, सप्तांग विशिष्ट और इन्द्रियादि उन्नीस मुख अर्थात् पांच कर्म्म इन्द्रिय पांच ज्ञानेन्द्रिय पांचों प्राण और मन बुद्धि चित्त अहंकार इन उन्नीस मुखों से स्थूल विषयों का भोग करनेवाला वैश्वानर नाम प्रथम पाद। स्वप्न अवस्था मे आत्मा अभ्यन्तर ज्ञानवान अर्थात् इन्द्रियों के व्यपार बिना केवल वासना मय अन्तः करण से सूक्ष्म विषय का भोग करनेवाला तैजस नाम द्वितीय पाद। जीव निद्रित होकर जो अवस्था में कोई काम्य विषय का कामना नहीं करता है अथवा कोई स्वप्न भी नहीं देखता है इसी को सुषुप्तावस्था कहते है। यह अवस्था एकही भाव प्रज्ञानघन स्वरुप चित्तसुख, आनन्द मय, आनन्द भोक्ता प्राज्ञनाम तृतीय पाद। यही सर्वेश्वर सर्वान्तर्यामी सर्वनियन्ता समस्त प्रपंच जगत् का कारण, इसी से समस्त भूतों की उत्पत्ति और नाश होता हैं। जिस अवस्था मे आन्तरिक ज्ञान नहीं वाह्य ज्ञान नहीं, और उभय सन्धि ज्ञान भी नही, जिस अवस्था मे प्रज्ञान घन नही, प्रज्ञ नही अप्राज्ञ भी नही, और जो अवस्था अदृष्ट अव्यवहार्य, अग्राह्य अलक्ष्य, अचिन्त्य एकात्म प्रत्यय गम्य, निष्प्रपंच, शान्त मंगल स्वरुप, अद्वितीय इनही को चतुर्थ पाद आत्मा करके जानो यही आत्मा जानने का योग्य है।

अथ हैन मत्रिः पप्रच्छ यएषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा कथ मह मिमं विजानीयामिति । सोऽविमुक्त उपास्यत इत्युवाच याज्ञवल्क्यः । सोऽविमुक्त कस्मिन् प्रतिष्ठित इति अत्रिः पप्रच्छ । वरणायामस्याञ्च मध्ये प्रतिष्ठित इत्युवाच याज्ञवल्क्यः वरणाया मस्यामित्यत्र विभक्तिव्यत्यये षष्ठी ज्ञातव्या। काच वरणा भवति का चासीति अत्रिः पप्रच्छ। सर्वान् इन्द्रियकृत दोषान् वारयतीति वरणा भवति । सर्वानिन्द्रिय कृतान् पापानस्यति तेनासीत्युवाच याज्ञवल्क्यः। सर्वानिन्द्रिय कृता नित्युभय सर्वानिन्द्रिय कृतान् पापानिति लिंगं व्यत्यय विधेयः वारयति निवारयातीति वरणा । अस्येति निरस्यतीति असिः सर्वानिन्द्रिय कृतान् पापान्नाशयतीति केचित् पठन्ति । स्पष्ट मन्यत ॥

मोक्ष चाहनेवाले धर्मात्मा अत्रिमुनिने महात्मा याज्ञवल्क्य से पूछा कि ऐसे अचिन्त्य अव्यक्त अनन्त आत्मा को मैं किस प्रकार से जानूंगा।' उत्तर। अविमुक्त की उपासना किजिये । प्रश्न । अविमुक्त कहां । उ० । वरणा और असी के मध्य मे । प्रश्न । वरणा कौन है और असी कौन है । उ० समस्त इन्द्रियों के किए सम्पूर्ण दोष जिससे निवारण होते हैं उसका नाम वरणा और सब इन्द्रियों से किये हुए सम्पूर्ण पापों के जो नाश करती है उसी को असी कहते हैं ।

कतमच्चास्याः स्थानं भवतीत्यत्रिः पप्रच्छ। भ्रुवोर्घ्राणस्य यः सन्धिरित्युवाच याज्ञवल्क्यः । अत्रघ्राण शब्देन घ्राण वायु प्रचारकं घ्राण मूल मुच्यते । वाराणसी भ्रुवोर्मध्ये अविमुक्तं तयोर्भ्रुः अध्यात्मेवाति दिष्टन्त भ्रुवो र्घ्राणस्य चान्तर मिति । भ्रुवोर्मध्ये प्राण मवेश्येति भगवद्वाक्य मपि ॥

अत्रि मुनि के प्रश्न अनुसार याज्ञवल्क्यने पूनर्वार जो उपदेश किया सो लिखा

जाता है। मतान्तर योग शास्त्र और भगवद्वाक्यानुसार शरीर मध्य में अविमुक्त निरूपण होता है। दोनों भौं के बीच नासिका के मूल इडा पिङ्गला नाडी के मध्य में सुषुम्ना मार्ग से प्राण वायु जहां प्रवेश करता है वही ब्रह्म स्थान को अविमुक्त कहते हैं सो अविमुक्त अध्यात्मवित् अर्थात् आत्म तत्त्वज्ञ योगीयों का उपास्य है।

अविमुक्ते प्राणान् परित्यजतः परब्रह्म प्राप्तिं प्रतिपादयति। दिवः परस्य लोकस्य सन्धिं सन्ध्येति चोच्यते। सैव सन्ध्याऽविमुक्ताख्या तत्रेश्वर मुपासते॥ सगुण ब्रह्म वेत्तार स्तेषां ज्ञानं स ईश्वर आचष्टे चा विमुक्ताख्ये यत्र तस्यैव सेवकाः॥

अविमुक्त में प्राण त्याग होने से ब्रह्म प्राप्ति होता है सो प्रतिपादन करते हैं। स्वर्ग और परलोक के सन्धि को सन्ध्या कहते है, इस सन्धिस्थान का नाम अविमुक्त है जहां सगुण ब्रह्म को जाननेवाले परमेश्वर की उपासना करते हैं और परमेश्वर अपने सेवकगणों को ज्ञान उपदेश करता हैं।

जीवेश्वर विभागस्य प्रसंगात् प्रतिपद्यते। प्रकृत स्योपयोगित्वाच्छास्त्र दृष्टेन वर्त्मना॥ सृष्टेस्तु प्राक् सच्चिदानन्दबोधस्वरूप मखण्ड मद्वितीयं परं ब्रह्मैक मेव जागर्त्ति नान्यत किञ्चिदस्ति। तथाच श्रूयते। आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत नान्यत् किंचन मिषदिति सदेव सौम्येद मग्र आसीदेक मेवाद्वितीयं ब्रह्मेतिच। तन्मायया द्वैरूप्यं प्रतिपद्यते। मायाच कार्य्य कारण रूपेण द्विरूपा। कारणोपाध्युपहितं यच्चैतन्यं तत् सर्वज्ञं सर्व्व शक्ति सर्व्वेश्वरं जगत् सृष्टि स्थिति प्रलय कारणं भवति। कार्य्योपाध्युपहितं यच्चैतन्यं तज्जीव संज्ञ मल्प शक्ति संसारि परतंत्रं भवति।

कार्य्योपाधिषु कारणोपाधीश्वरस्य कार्य्येषु कारणानुवृत्ते रधिष्ठातृत्व मुपपद्यते। द्वासुपर्णा सयुजा सखाया इति श्रुतेः।

पर्य्यायत्व मविद्याया मायायाश्च तथा परे प्रयोगेषु प्रसिद्ध-त्वान्मन्यन्ते लोक वेदयो: । शक्तिद्वयमविद्याया: कल्पयंति चतेतत: ।स्वाश्रया मोहिनी काचन्मोहिनी नपराग्रमपि॥ तमो, मोहो, महामोह, स्तमिस्र, ह्यन्धसंज्ञित: । अविद्या पंच पर्वं सा प्रादुर्भूता महात्मन: ब्रह्मदेवमनुष्येषु पशुषु स्थावरे-षुच। पंचधाया विभक्तात्मा वर्त्तते चिदपाश्रया। तामविद्यां तथा भूतां भगवान् परमेश्वर: संहरत्युदयेनैव सहस्रांशु स्तमोयथा॥

कामी-मुक्ति की अनुकूलता के लिये वेदान्त प्रमाण से जीव और ईश्वर का विभाग प्रति पादन करते हैं, सृष्टि के पूर्व्व काल में सच्चिदानन्द बोध स्वरूप एक अखण्ड अद्वितीय पर ब्रह्म जागृत थे दूसरा कुछ नहीं था, श्रुति में लिखा है। द्वितीय श्रुति में लिखा है कि आत्मा वा इति इसका अर्थ, इस प्रकार से हैं कि जगत के पूर्वमें एक आत्मा था दूसरा इषद अर्थात् कुछ भी नहीं था तिसरी श्रुति कहती है कि सदेवेति। हे सौम्य इस जगत के पूर्व एक सत् स्वरूप अद्वितीय ब्रह्म था। जो आपनी माया से दुइ रुप में प्रकाश है, माया कार्य्य और कारण भेद से दुइ प्रकार है, कारणो पाधि माया में अवस्थित चैतन्य सर्व शक्तिमान सर्वज्ञ सर्वेश्वर जगत् सृष्टि स्थिति प्रलय का कारण है। और कार्य्योपाधि माया में स्थित चैतन्य जीव संज्ञक अल्प शक्तिमान मलिन वासनायुक्त संसार के आ-धीन है। समस्त कार्य्य कारण का अनुगामी होता है इसलिये समस्त कार्य्यो-पाधि में कारणोपाधि ईश्वर का अधिष्ठान है इसका प्रमाण श्रुति में लिखा है कि स्वजातीय दुइ पंछि एक वृक्ष को आश्रय करिके निवास करती है। वेद और अपरश्च पर प्रमाणों से माया और अविद्या दोनो को एक करके वर्णन किया पृथक नहीं। यह अविद्या की दो शक्ति हैं एक तो स्वाश्रय मोहिनी दूसरी मोहिनी इसका विवरण यथा, तमो, मोह, महामोह, तामिस्र, अन्ध, यह पांच प्रकारकी अविद्या महात्मा ब्रह्म से उत्पन्न हुई है, वे अविद्या चैतन्य को आश्रय करके पांच

प्रकार से ब्रह्मा, देवता, मनुष्य, पशु, औ स्थावरादि पांचों मे स्थित है। यथा ब्रह्मा मे तमो रूप से, देवतो मे मोह रूप से, मनुष्यों मे महामोह, तमिस्र पशु मे, अन्ध स्थावर मे इसी से जीवों का भिन्न भिन्न प्रकाश है। ये पांच प्रकार की अविद्या जो चैतन्य स्वरूप आत्मा का आश्रय करके अवस्थित है, भगवान परमेश्वर प्रगट हो कर उन का विनाश करते है जैसा सूर्य प्रकाश हो कर अन्धकार का नाश करता है।

आजन्तोरन्तहि प्राणै रुत्क्रमत्र मानस्य रूद्रस्तारकं ब्रह्मव्याचष्टे इत्य स्याय मर्थः।

वरणासि मध्यवर्त्तिनां मनुष्यव्यतिरिक्तानां जंगमानां स्थावराणांच वाराणसी प्राप्ति स्थिति प्रलय कारणानां पुण्य कर्म्मणां भूयस्त्वात् प्रारव्धेन शरीरेण क्रियमाणयोः पुण्य पापयोरसम्भवात् प्रारव्धस्यच कर्म्मणो भोगादेव परिक्षयात् प्राण प्रयाण समये सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वान्तर्यामी परम कारुणिकः परमेश्वरः सिद्ध मात्मरूप मविद्या प्रहाणादभिव्यञ्जति अवगमयतीत्यर्थः। तथाच श्रुतेः।

योदेवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधिको यो रुद्रो महर्षिः हिरण्य गर्भं पश्यति जायमानं सनोदेवः शुभयास्मृत्या संयुनक्तीति रुद्रस्य सर्वशक्तिमत्वंच श्रूयते।

नतस्य कार्य्यं कारणंच विद्यते। न तत्समश्चाभ्यधिकंच विद्यते॥ परस्य शक्ति र्विविधैवश्रूयते। स्वाभाविकीज्ञान वल क्रिया चेति॥

मनुष्य भिन्न वाराणसी मध्यवर्त्ति स्थावर जंगमादिकों को वाराणसी प्राप्ति स्थिति और प्रलय के कारणों भूत पुण्यारब्ध कर्म्मों से बना हुआ स्थावर जंगमादि के शरीर से क्रियमान पाप पुण्य उत्पन्न होने का कोई सम्भव नही है। इसलिये इन सबों का प्रारब्ध कर्म भोग द्वारा क्षय होतेही प्राण वियोग समय मे सर्वज्ञ,

सर्वशक्तिमान, सर्वान्तर्यामी, परम कारुणिक परमेश्वर, अज्ञान रूपी अविद्या का नाश करके अपने स्वरूप की प्राप्ति कराय देते हैं, जैसा विस्मृत हुआ गलेका हार स्मरण होतेहि गले में मिल जाता है, जैसा भ्रम से रसी में सर्प ज्ञान होने से अभ्रान्त पुरुष के उपदेश से पुनर्वार रस्सी का जथार्थ स्वरूप ज्ञान हो जाता है, तैसाही सर्वशक्तिमान ज्ञानदाता विश्वेश्वर के उपदेश से जीव आत्म स्वरूप को प्राप्ति हो जाता है।

ईश्वर का सर्वशक्तिमानत्व का श्रुति प्रमाण लिखा जाता है। जो देवतों का आदि, विश्वसे अधिक, और जो रुद्र महर्षि हिरण्य गर्भ को प्रथम उत्पन्न देखतेहै, सो हमलोग को शुभ स्मरण मे नियोग करते हैं। ईश्वर का कार्य्य और कारण भी नही, उनका समान वा अधिक नही परन्तु ईश्वर की विविधशक्ति हैं यथा स्वाभाविकी शक्ति इच्छा, ज्ञान क्रिया रूपा।

मनुष्येषु ये जीवन्मुक्ता तेषां प्राणोत्क्रमणं नास्ति। न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव सम-वलीयन्त इति श्रुतेः। ते यत्र क्वापि निवसतः प्रारब्ध कर्म्म क्षये विदेह कैवल्यं प्राप्नुवन्ति॥

मनुष्य जाति के मध्य मे जो लोग जीवन्मुक्त है अर्थात् सम दमादि चारो प्रकार के साधनों को सम्पूर्ण करके सद्गुरुका उपदेशसे तत्त्वमस्यादि महा वाक्य विचार जनित अद्वैत आत्म तत्व ज्ञान लाभ किया है। अर्थात् जीव आत्मा और परमात्मा को अभिन्न जान कर समाधि अवस्था मे प्राण वायु ब्रह्म मे लीन किया हैं। उन महात्मा गणों के प्राण बाहर गमण नही करते है, वर्त्तमान अर्थात् इसी शरीर से प्राण ब्रह्म मे लीन हो जाताहै, जैसा प्रतप्त लोह मे जलविन्दु पड़तेही लय हो जाता है, तैसाही ज्ञानियों के लिंग शरीर ब्रह्म मे लीन हो जाते हैं। केवल दग्ध वस्त्र के नाई प्रारब्ध कर्म क्षय पर्यन्त दृश्यमान शरीर वर्त्तमान रहता है। वह महात्मा गण कोई स्थान मे वास करते है उन सबों के प्रारब्ध कर्म्म का क्षय होतेही विदेह कैवल्य रूप निर्व्वाण मुक्ति प्राप्ति होती है॥

येच सगुण ब्रह्मोपासकाः येच केवल फल निरपेक्षाः सन्तः कर्म्मानुष्ठातार श्चोपासकाः येच केवल निरपेक्षाः सन्तः श्रुति

श्च्,त्य ज्ञाश्चवर्णाश्रमोचित कर्म्मानुष्ठातार स्तेषां चत्वारिंशत संस्कारै रशेषै रसंस्कृतत्वे पि अष्टभिरात्म गुणैर्युक्तानां प्राण प्रयाण समये पूर्व्वोक्त न्यायेन भगवान् परमेश्वर,स्तारकं ब्रह्म उपदिशति ॥

जो लोग सगुण ब्रह्म की उपासना करते हैं, जो लोग केवल फल आशा त्याग करके कर्म्मानुष्ठान करते हैं, और जो लोग केवल फल आसा छोड़ करके श्रुति स्मृति वाक्यानुसार अपने अपने वर्णाश्रम उक्त चालीश प्रकार के संस्कार कर्म्मों से असंस्कार होने से भी जो आठ प्रकार के आत्म गुणों से युक्त हैं उन के प्राण वियोग समय में पूर्वोक्त प्रकार से भगवान परमेश्वर तारक ब्रह्म का उपदेश करते हैं ॥

अन्येषा मप्यशेषाणां गंगावगाहन दर्शनाभ्यां यज्ञ दान तपोभिश्च याहच्छकै: पुराकृतै: कर्म्मभि: सुकृतै: दुष्कृतै: उभर पुण्य पापानां धन्या वाराणसी पुरी । इदं प्रियं च्चेच मिति प्रियं मे संसार बीजोषर मूषराणा मिति वचनाभ्यामूषरत्वेन प्रसिद्ध च्चेच प्रभावेन च नष्टावशिष्ट पाप कर्म्मण: कामस्य पुण्य कर्म्मणोपि मुक्तिरेकेन जन्मनेति मुक्ते रवशश्भावित्वात् प्रारब्ध एव शरीरे भोक्तव्यत्वोपपत्ते रत्युत्कटै: पुण्य पापै रिहैव फल मश्नुते इति वचनात् काश्यां कृतयो: पुण्य पापयो रुत्कटत्वाद्वर्त्तमान एव शरीरे भोक्तव्य नियमाच्च तयो: पुण्य पापयो,: फल दानाय ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्ज्जुन तिष्ठति । मायान्तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनन्तु महेश्वर मिति वचनात मायावी परमेश्वर: प्राण प्रयाण समयात पूर्वं च्चणे नैकेनानेक काली नेष्टानिष्ट कर्म्म फलोप भोग योग्य शरीरान्तरानु प्रवेशं माययैवोत्पाद्य इष्टा निष्टान् स्वप्न कल्पान् भोगानुभाव्य पश्चात् पूर्वोक्त न्यायेन तारकं ब्रह्मो पदिशतीत्यवश्य

मेवाभ्युपगन्तव्यं। तथाच सूत संहितायां। ईदृशी परमा निष्ठा गुरो: साक्षान्निरीक्षणात् कर्मसाम्ये त्वनायासात् सिद्ध त्येव न संशय:। कर्म्म साम्ये कर्म्मणो: सुकृत दुष्कृतयो: फल भोगेन क्षयसाम्ये सतीत्यर्थ:। अन्यथा प्रत्यक्ष स्मृति विरोधात् प्राणोत्क्रमणमानस्येति वर्त्तमानर्थ विहित प्रत्यय सामान्यात् मुक्ति रेकेन जन्मनेति वचनात् अत्रैव मृत माचाणा मिति माचाच प्रत्यये प्रयोग प्राबल्यात् नचातो व्यवधान वंतीति वाराणसी मुक्ते: कालान्तर व्यवधानाश्रवणात्। स्मृत्यर्थानां गुणाना मन्येषामपि वचनानां भूयसां संभवात् प्रमाणवन्त्य दृष्टानिकल्प्यानि स्वबहून्यपि वालाग्रशत भागोपि नकल्प्यानि प्रमाणक इति न्यायात्। पीनोदेवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते इति वाक्ये रात्रि भोजन मन्तरेण पीनत्वानुपपत्ते:। यथा रात्रि भोजन कल्प्यते तथैव चात्रापि स्मृति स्मृत्यन्यथानुपपत्त्या मुक्ति रेकेन जन्मना जन्तोरेष्टव्या। जाग्रत स्वप्नयो: कर्म्म फल भो-गेन कस्यचित् विशेषोस्ति। तस्य एव अवस्थात्रय: स्वप्ना इति श्रुते माया विमोहितानां क्षणेनैकेन विग्रहान्तर परिग्रहा विचित्रा स्वानुभवा: श्रूयन्ते उक्तंच वाशिष्ठे। यथा स्वप्न मुहू-र्त्तस्यात् संवत्सरशत भ्रम: तथामाया विलासोत्यो जायते जाग्रति भ्रम:। उक्तंच संक्षेप शारीरके सुप्तोजन्तु: स्वल्प मात्रेपि काले कोटि: पश्ये हृत्त संवत्सराणां। कोटि पश्ये देव मागामिनां जाग्रत काले योजयेत् सर्व्व मेतत्। दीर्घ स्वप्न मिदं विश्वं विद्ध हन्तादि संयुतं। अत्रान्य स्वप्न पुरुषोयद्दमे जाग्रति स्थित:॥

अन्य २ अनेक प्रकार के मनुष्यों के गंगा स्नान दर्शन यज्ञ दान तपस्यादि कर्म्म से जो पुण्य सञ्चय होती है और इच्छा, पूर्व्वक पूर्वकृत पुण्य पाप उभय कर्म्म के



ऊषर भूमि वाराणसी पुरी धन्य है। यह क्षेत्र मेरा अतिशय प्रिय है, क्योंकि समस्त ऊषर क्षेत्रों के मध्य में जन्म मरण रूप संसार बीज का ऊषर क्षेत्र है, अर्थात् जैसा ऊषर भूमि में बीज अङ्कुर नहीं जाता है, तैसाही इस अविमुक्त वाराणसी ऊषर क्षेत्र में कर्म रूपी बीज का अंकुर नहीं होता है। इस ज्ञानाग्नि रूपी वाराणसी क्षेत्र के प्रभाव से संचितकर्म नष्ट होजाताहै। और अनागत क्रियमाण जो पाप और पुण्य उसके फलोंको भोग करनेवाला जीव प्रारब्ध अनुरूप एकही जन्म में दूसरी शरीर से भोग करता है क्योंकि कृत कर्मों का फल तो अवश्य भोग करना होगा और काशी में मरने से पुनर्जन्म भी नहीं होगा इसलिये इस के नियम ये हैं कि समस्त पाप पुण्य के फल देने का निमित्त ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में स्थित हो, कर माया रूपी यन्त्र से सबों को भ्रमण कराताहै। माया प्रकृति और महेश्वर मायी इस प्रमाण से मायावी परमेश्वर प्राण वियोग समय के पूर्व एक क्षण में बहुकाल के इष्ट अनिष्ट कर्मों के फलों के योग्य शरीरों को माया से उत्पन्न करके इष्ट अनिष्ट समस्त कर्म फलों को स्वप्न कल्पवत् भोग का अनुभव कराय के पश्चात् पूर्वोक्त रीति से तारक ब्रह्म उपदेश करता है यह अवश्य अंगिकार है। सूत संहितामें लिखा है कि इस प्रकार परमइष्ट गुरुके साक्षात् दृष्टि से कर्म साम्य होने के अनन्तर जीव अनायास मुक्त हो जाताहै इस में संशयनहीं। कर्म साम्य का अर्थ अर्थात् सुकृत दुस्कृत प्रारब्ध कर्म का फल भोग से क्षय होना। अन्यथा श्रुति विरोध, और प्राण उत्क्रामन्दमाश्च के अर्थ प्राण प्रयाण समय बर्त्तमान अर्थ निहित हैं, एवं एक जन्म में मुक्ति इस वचन के अर्थ से यहां मरतेही मुक्ति। मात्र शब्द श्रुति में इसलिये रखा गया है कि मरतेही मुक्ति हो इसका व्यवधान करनेवाला दूसरा समय ग्रहण नहीं होसक्ता, वाराणसी मुक्ति के कालान्तर व्यवधान करनेवाला कोइ श्रुति भी प्रमाण नहीं है। श्रुति के अर्थ और अन्य अन्य सम्भावित प्रमाण युक्ति से अत्यन्त सूक्ष्म अदृष्ट विषय भी कल्पित होताहै, यथास्थूल शरीर देवदत्त दिन में भोजन नहीं करते है इस वाक्य से रात्रि भोजन के बिना उसके स्थूलत्व का कोई कारण नहीं होता है, जैसा इस स्थान

मे रात्रि भोजन की कल्पना होतीहै, तैसाही श्रुति स्मृति अन्यथानुपपत्य अन्य एकही जन्म में मुक्ति श्रुतिस्मृति प्रमाण से निश्चित है। क्योंकि काशीमृत जीवों के जन्मान्तर वा कालान्तर व्यवधान किसी प्रकार से कल्पित नही हो सक्ता। जागृत और स्वप्न अवस्था मे कर्म्म फल का भोग विषय मे कुछ विशेष नही है, जागृत स्वप्न सुषुप्ति इन तीन अवस्थाओं के मध्य मे स्वप्न श्रुति मे लिखा है कि माया विमोहित मानव गण क्षण-काल के मध्यमे शरीरान्तर का परिग्रह एवं अद्भुत अनुभव श्रुति होता हैं। योग वाशिष्ठ मे लिखा है कि मूहुर्त काल के स्वप्न मे एकशत सम्वत्सर का भ्रम होता है और संक्षेप सारीरक मे उक्त है कि माया विमोहित जीव गण जागृत समय मे भी भ्रम को प्राप्त होते हैं। जैसा सूताहुआ जीव क्षण काल के मध्य मे अनेक सम्वत्सर के वर्तमान और आगामी वृत्तान्तों का अनुभव करता है; वैसाही जागृत अवस्था मे सम्पूर्ण वृत्तान्तों का अनुभव होता है। मायामय प्रपंच जगत् को दीर्घ स्वप्न के तुल्य श्रुति मे निर्देश किया है, तो इस विश्वरूपी दीर्घ स्वप्न मे जो स्थित है सो अपने को जागृत अवस्था मे स्थित मानता है।

शैवागमेऽपि

कपालभिन्द: करिचर्म नागा:। काशीपुरी कण्ठगतस्य जन्तो:॥
मूर्छासु मुर्छासु परिस्फुरन्ति। संज्ञासु संज्ञासु तिरोभवन्ति॥

शैवागम मे लिखा है कि काशीवासी जीवों के अन्तकाल मे जिस जिस समय मे मूर्छा आय जाती है, तिस तिस काल मे वाघाम्बर परिधान भूजंग भूषण चन्द्र शेखर भगवान महादेव का दर्शन होता है, संज्ञा प्राप्त होने से अर्थात् वाह्य ज्ञान होने से दूर हो जाता है।

काशीखण्डेऽपि। कृत्वा कर्म्माण्यनेकानि कल्याणानी तराणिच तानि क्षणात् समुत्सिज्य काशी संस्थो मृतो भवेत ॥ महापापौघ

शमनीं पुण्योपचय कारिणीं भुक्ति मुक्ति प्रदामन्ते कोनकाशीं सुधीः श्रयेदिति ॥

काशीखंड में लिखा है, कि अनेक प्रकार के सुकृत और दुष्कृत कर्म्मों को करनेवाले एक क्षण में समस्त कामों को दूर करके काशी वासी जीव मुक्त होते हैं। ऐसे पुण्यों के वृद्धि को करनेवाली महापातकों को नाश करने वाली अन्तकाल में भोग और मोक्ष को देनेवाली काशी को कौन सुबोध लोग आश्रय नहीं करते हैं।

पुराणान्तरेष्वपि स्मर्य्यते। तथाहि भगवन्मायया विमोहितः कदाचिन्नारदः कन्यात्व मवापता कैश्चिदुपायै स्तदापुत्रान् वहून् जनयत्। सांसारिकञ्च दुःख मनेक कालिन मनुभवन्भर्त्तृः पुत्राणांच वियोगेन शोकेन साकदाचिदुदकाहरणाय गंगातीर मुपासीत् किरात जातिस्वभावाद्वासः कुम्भंच तीरे निधाय गंगायां प्राविसत् प्रविष्ट माचात् क्षणेकेन स एव मुनि रभवत विलसयन्तीं तामालोक्य तद्भर्त्तृ पुत्र सम्बन्धि वान्धवास्तंदेश मागत्य वासः कुम्भंच तदीयं दृष्ट्वा गंगा प्रवाहेन सानीतेति निश्चित्य महान्तं प्रलापञ्चक्रुः। ततस्तेन मुनिना सोमहर्षीति प्रबोधिताः प्रकृतिस्थाऽभवन्। अथ विज्ञानैर्बहुभिः प्रबोध्यमानाः यथागतं सत्यमित्य मेवै तदिति शोकं परित्यज्यागच्छन्निति वराह पुराणे।

एक समय में देवर्षि नारद भगवान की माया से मोहित होकर गंगाजी में स्नान करने को गये और ज्योंही गोता लगाया त्योंहीं नारी रूपी होकर क्रम से अनेक पुत्रों को उत्पन्न किया इसी प्रकार से बहु काल पर्यन्त नाना प्रकार के सांसारिक दुःख और पुत्र आदि के वियोग शोकों को अनुभव करके एक दिन गंगाजी में पानी लेने के लिये जाकर किरात जाति के स्वभाव अनुसार वस्त्र और कुम्भ किनारे में रखकर ज्योंही अवगाहन किया, त्योंही पुनर्वार अपने स्वरूप को प्राप्त हुआ। तब उस के

पति, पुत्र, बन्धु बान्धव और देशस्थ लोग विलम्ब देखकर गंगाजी में जाकर देखा कि कुम्भ और वस्त्र किनारे में पड़ा है, तब वे लोगों ने जाना कि वह गंगाजी के प्रवाह में बह गई यह निश्चय करके शोकाकुल चित्त से नानाविध प्रलाप करके वे लोग रोदन करने लगे। तब नारद उन सभों को देख कर अपना पूर्व वृतान्त स्मरण करके कहा, कि वह मैं हूं। नारद के बहु विध प्रबोध वाक्य से वे लोग शोक को त्याग करके ऐसाही सत्य होगा यह कह कर अपने २ गृह को चले गये यह इतिहास वराह पुराण में लिखा है। तात्पर्य यह है कि एक समय में नारद मुनि भगवन्माया के माहात्म्य को जानने को इच्छा किया था, तब भगवान अपनी माया के अद्भुत कार्य को देखाया कि क्षण काल मध्य में अर्थात् जितने समय में मुनिने गंगाजी में गोता लगाय के सिर उठाया उतनेही समय के मध्य में यह समस्त अद्भुत व्यापार का अनुभव हुआ।

न निरूपयितुं शक्या विस्पष्टं भासतेचया।
सामायेतीन्द्रजालादौ लोकाः संप्रतिपेदिरे॥

जिसका स्वरूप किसी प्रकार से निरूपण नही होसक्ता परन्तु जगत् मय देदीप्य-मान प्रकाश है. ऐसे इन्द्रजालिक व्यापार को लोग माया कहते हैं माया से असाध्य वस्तु कुछ नही है।

द्रवत्व मुदके वह्नावौष्ण्यं काठिन्य मश्मनि।
मायायादुर्घटत्वंच स्वतः सिद्ध्यति नान्यथा॥

जैसा जल में द्रव स्वभाव, अग्नि में उष्ण स्वभाव, पाथर में काठिन्य स्वभाव स्वतः सिद्ध है तैसाही माया में अद्भुत व्यापार स्वतः सिद्ध है यथा यत्र कुण्ठी भवेत् बुद्धिः समोह इति लौकिकाः।

जहां बुद्धि प्रवेश नही कर सक्ती ऐसे मोह को माया कहते है।

तथा लवणाख्यो राजा कश्चिन्मन्त्रिसामन्तनृपतिभूयस्यां स-भायां सिंहासनस्थो मायाविना केनापि विमोहित स्तदानीं माया दर्शित मश्वरत्न मधिरुह्य समस्तां पृथिवीं बभ्राम। अथ जविना तेन पातितः। कश्चिश्चिद्द्विजनेऽशयिष्ट। चुत्तृष्णा प-

रे तस्याय मरणाय व्यापारं कञ्चित कुर्व्वतः पितुः क्षेत्रे पानीय मन्नं चादाय गच्छन्तीं चाण्डाल कन्यकामपश्यत् ॥ तदन्तिक मुपसृत्या ब्रवीत् । क्षुत्पिपासार्हितस्य मेऽत्र कमन्नं पानीयञ्च देहि इति । साचैन मुवाच त्वञ्चेन्मम भर्त्ता भविष्यसि तर्हि दास्यामीति । तथेत्यभ्युपगमय्य अथैक देशस्य मन्न मभक्षयत पानीयञ्चा पिबत् । ततः सात पितुरन्तिकं नीत्वा वृत्तान्त मावेद्य दनुज्ञाता भार्य्याविनाभर्त्ता साकं स्वभवनं मयासीत् मातृ भ्रातृ भगिनीनां चैन मदर्शयत् । तेच तास्मैन मब्यनन्दनमस्ताञ्चता-मुद्वाह विधिनापर्य्य ग्रहीत् तयासह चिरकालमुवास । तस्यां पुत्रान् बहूनूत्पादयत । अथकालेन गच्छता दुर्भिक्षोपहत स्तस्मा-द्देशात तयाभार्य्ययाताभिश्च प्रजाभिः सार्द्धं देशान्तर मयासीत् । सकदाचिन्निर्जने प्रदेशेकस्मिं श्छिद्रच्छ भूतले क्षुत्पिपासार्हिताभिः प्रजाभिर्भार्य्ययाच सार्द्धं परिश्रान्तोऽशयिष्ट । ततोऽन्नं पानीयंच देहीति क्षुत्पिपासार्हितैः शिशुभिः प्रार्थ्यमान स्तेभ्य स्तदा-नीं तद्दातु मुपायं कञ्चिद लभ्यमान स्तेषामार्त्ति परवशः वचः सोढु मशक्नुवानो वनादेधांस्याहृत्य सन्निपात्य प्रज्वाल्य पक्व शरीर मे ते भक्षयन्त्विति बुद्ध्याप्रज्वाल्य झटित्यग्निं प्राविशत् । ततः क्षणादुन्मील्याक्षिणी विस्मयाविष्टःक्षणेनैकेन तद्वृत्तं मन्त्रि सामन्त नृपतिभ्यः कथयामासेति कथा वाशिष्ठ रामायणे एवं जातीयकाः सन्त्यन्या अनेकशः कथाः ।

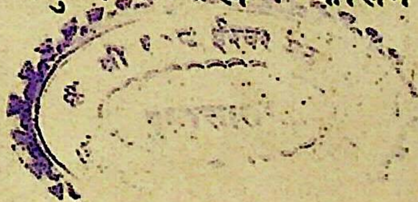
लवण नाम एक महाराजा सैन्य सामन्त और मन्त्री गण संवेष्ठित होकर सभा मध्य में राजगद्दी पर बैठे थे, उसी समय किसी मायावी की माया से मोहित होकर देखा कि एक मनोहर अश्वरत्न कोई दूत सम्मुख लेआया, राजा गद्दी से



उठ खड़ा होकर देखने लगा, तब मायावी ने कहा ; नरपती इस सर्वांग सुन्दर मनोहर तुरंग पर आरोहण कीजिए इतना राजा सुनतेही अचेत न होकर धरणी में गिरा सभासदगण राजाकी यह अवस्था देखकर उठाके गद्दी पर बैठाय दिया । राजा एक मुहूर्त उसी प्रकार अचेतन रह कर फिर चैतन्य हो कर घबड़ाके इधर उधर देखने लगा और क्या आश्चर्य है ऐसा कहा, तब मन्त्रिगणों ने वृतान्त पूछा राजा अति मृदुस्वर से बोला, कि हे मन्त्री लोगों मुख्य अद्भुत वृतान्त को सुनो, हमारे सन्मुख में जो सुन्दर अश्व खड़ा रहा मुझे उस पर आरोहण होतेही वह वायु वेग से भागा, समस्त पृथिवी भ्रमण करके परिणाम सूर्य अस्त सन्ध्या समय में एक महारण्य में प्रवेश किया । घोर तिमिराछन्न रात्री मे हम अकेले निर्जन कानन मे अत्यन्त भीत होकर एक वृक्ष के मूल मे घोड़े को बांधकर वृक्ष के ऊपर आरोहण किया, अश्व बल पूर्वक रज्जु छिन्न करके अति वेग से भागा । हम क्षुधा तृष्णा से कातर होकर रात्रि को व्यतीत करके प्रभात समय मे वृक्ष से उतर कर विजन कानन मध्य मे भ्रमण करने लगा, बाहर निकलने का कोई मार्ग न पाया केवल अरण्य मध्य मे निरन्तर भ्रमण करते हुये क्षुतिपपासा से प्राण अत्यन्त व्याकुल हो गया ; किस प्रकार से जीवन रक्षा होगी इसी चिन्ता मे मध्याह्न काल वितीत हुआ तीसरे पहर कृष्ण वर्णा क्षुद्र नयना मलिन वसना नव यौवना एक कामिनी नेत्र गोचर हुई तब हम उसके निकट जाकर पूछा, सुन्दरी आप कौन कहा गमन करतीहैं, कामिनी ने उत्तर दिया कि मै चण्डाल कन्याहूं मेरा पिता इसी बनके प्रान्त भाग मे हल कर्षण करतेहैं उनके लिये अन्न लेजातीहूं, तब हम ने प्राण की रक्षा के लिये कुछ अन्न मांगा, चण्डाल कन्या ने कहा कि यदि आप मेरा पाणि ग्रहण करें तो स्वामी की जीवन रक्षाके निमित्त कछ अन्न मैं देसक्तौ हूं, तब हम ने अपनी प्राण रक्षा के लिये विवाह करना अंगीकार किया, अनन्तर उसने कुछ अन्न मुझको दिया, तब हमने भोजन करके क्षुधानल को शान्तकिया, पश्चात् पति अभिलाषिणी चण्डाल कन्या हमको साथ लेकर अपने पिताके निकट गमन

किया, उसका पिता दोनोंकी चल के बन्धन से छोड़कर भोजन किया। तब चण्डाल कन्या आने विवाह के वृतान्त को पिता से कहा, चण्डाल आनन्दित चित्त से कन्या सहित मुझे घर से लेगया, कन्या के भ्राता भगिनी ज्ञाति कुटुम्बादि मुझे देखकर आनन्दित चित्त से विवाह की लग्न स्थिर कर चण्डाल जाति के कुलाचार अनुसार विवाह किया। पत्नी सहितसुख सम्भोग से कुछ काल व्यतीत हुआ अनन्तर उसके गर्भ से कोएक पुत्र और कन्या उत्पन्न हुए, हम वन से काष्ठ लेकर विक्री करके परिवार पोषण करने लगे। तदनन्तर अनावृष्टि होने से देश में दुर्भिक्ष उपस्थित हुआ, अन्न विना समस्त लोग शीर्ण शीर्ण होकर देश परित्याग करके देशान्तर गमन करने लगे, हम भी अपने स्त्री पुत्रादिकों को लेकर दूसरे देश में चले। मार्ग में बालक बालिकागण क्षुधानल से दग्ध होकर रोदन करके बारम्बार भोज्य द्रव्य मांगने लगे। हम कोई उपाय न देख कर बालक बालिकागण के रोदन सुन कर अत्यन्त कातर होकर अरण्य से काष्ठ लेकर अग्नि प्रज्वलित करके कहा, कि हमारे दग्ध शरीर का भोजन कीजिये यह कह कर हम अग्नि में प्रवेश किया, अब हमारे शरीर में चैतन्य हुआ, मन्त्रि औ अमात्य गण राजा के मुख से यह अद्भुत वृतान्त सुन कर विस्मयको प्राप्त हुये, वशिष्ट ऋषि के वाक्य से मायावीकी माया निवृत्त हुई औ मायावी अपने स्थान में चला गया, वशिष्ट रामायण का मूल इतिहास संक्षेप में वर्णन है, परन्तु योग वाशिष्ट के कथानुसार भाषा किञ्चित विस्तार करके लिखा, इस प्रकार अनेक इतिहास है सो वर्णन करने से पुस्तक विस्तार हो जाता है।

एवमुक्त प्रकारेण काशग्रामपि केषाञ्चित् स्वर्थ्य माणः शरीरान्तर प्रवेशः कालभैरव यातनाद्यनुभवश्च मायामय एवेत्यभिज्ञैरवगन्तव्यं। अयमर्थः सनत् कुमार संहितायां स्पष्टः। इहचैव पापैः सचेन्मृतोसौनजन्म मृत्यु लभतेत्ववश्यं कालेन भैयसगणैः फलेषु नियोजित स्तान् सकलं प्रयुज्य। अल्पेन कालेन



समस्त एव सार्थं पूरा रुद्र पिशाचे रूपैर्भव प्रसादेन कृतोपदेश: पिशाच योनेरपि मुक्ति मेति ॥

इस प्रकार से कोई कोई जीव काशी में देहान्त समय के तत् काल एवं मायारूपी शरीरान्तर प्रवेश पूर्व्वक काल भैरव दत्त यातना भोग करते हैं यह समस्त भायामय अभिज्ञ जनके बोध गम्य नहीं है । इसका अर्थ सनत्कुमार संहिता में स्पष्ट लिखा है कि कोई पापी जीव इस अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र में मरे तो उसकाभी जन्म मरण न होगा, परन्तु अवश्य करके पिशाच देह में प्रवेश करके अल्प काल के मध्य में समस्त कर्म्म फलोंको भोग करके जगत् गुरु सदाशिव के प्रसाद से परम तत्त्व ज्ञान लाभ करके पिशाच शरीर से मुक्त होकर विदेह कैवल्य रूप निर्व्वाण मुक्ति को प्राप्ति होगा ।

यथा पुण्यकृत मत्त्वयंस्यात्तथाच पापं नतयोर्विशेष: । इति स्तुति निन्दार्थवाद: अन्यथा सर्व्वेषां मनुष्याणां पुण्य पापयो रल्पयोर्वा संभवात्तयो रत्त्वस्तुत्वंगीकारे नकस्यापि मुक्ति: स्यात्तदच मुक्ति प्रतिपादकयो: श्रुति स्मृत्योर्वैयर्थ्यं स्यात् अतो हेतो: काश्यां किंचित् कालं उषित्वा वहिर्मत्वा ये म्रियन्ते तद्विषयमेव तदित्यवगन्तव्यं । वाराणस्यां कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यतीत्यपि वचनं तथैव मन्तव्यं पाप कर्म्मा कश्चित् काश्यां म्रियते । पुण्य कर्म्मा वहिर्म्रियते इति । नैवं विज्ञान विद्भिर्विचारणीयं एकस्मिन्नेव जन्मनि पुण्य पापयो: परिच्छेत्तारो वयमनादौ संसारे मनोवाक्कायै: कृतयो: पुण्य पापयो: परिच्छेत्ता परमेश्वर: तथाच ब्रह्म वैवर्त्ते स्कन्देनोक्त मगस्त्यं प्रति । नज्ञायते सूक्ष्मतरं हि किञ्चित् कर्म्मास्ति लोकस्य सुदुर्विभाव्यं । योगादि यज्ञादि तपोभि रुग्रैर्युक्तस्य नै सम्मति नास्ति काशी ॥ नज्ञायते कस्य किमस्ति पुण्यं स्वल्पोपि काश्यां तनुभृत् सदास्ते । देवादयोपि प्रभवन्ति नैवस्मात् नृणां काशिकायां कुगर्व्वी इति ॥

कृत प्रपन्नापेक्ष स्तारकं ब्रह्मोपदिशतीत्य वगन्तव्यं । अनन्तरं व-
ह्निः करोतीतिच । प्रति नियतैव वस्तु शक्तिः यथाग्नेर्दाहशक्तिः
स्तथा काश्यां मोचक शक्तिः प्रति नियतैव । यथा शुक्तौ पयोवा-
हात् पतिता जलविन्दवो मुक्ताःस्युःकाश्यां संस्थिता स्तथा स-
र्वेपि जन्तवः ॥

जैसा काशी में पुण्य कर्म्म करने से उसका फल अक्षय होता है तैसाही पाप कर्म्म करने से भी अक्षय होता है, स्तुति निन्दा अर्थात् पुण्य की प्रसंसा पाप की निन्दा विवाद अन्यथा । समस्त मनुष्यों के अल्प पुण्य वा पाप का अवश्य सम्भव पुनः अक्षय श्रुति के प्रमाण से किसी कौं मुक्ति नहीं हो सक्ता, क्योंकि पुण्य और पाप के क्षय विना मुक्ति नहीं होती है तो मुक्ति प्रतिपादक श्रुति स्मृति विफल होती है, इसलिये समस्त श्रुतिओं के अविरोध भावार्थ प्रकाश किया जाता है, कि जो लोग किंचित् काल काशी में वास करके अन्य प्रदेश में जाकर प्राणत्याग करते हैं, उन सबों के लिये अक्षय श्रुति के प्रमाण से पाप पुण्य अक्षय अंगिकार किया जाताहै और वाराणसी कृत पाप वज्र समान उन्हीं लोगों के लिये गण्य हैं । पापी मनुष्य काशी में मरते हैं और पुण्यवान बाहर जाकर मरते हैं यह विज्ञानवान पुरुष का विचार्य्य नहीं हैं ।

यह अनादि संसार में शरीर मन और वाक्य से कियाहुआ समस्त पाप पुण्य के संहार कर्त्ता परमेश्वर एकही जन्म में समस्त सञ्चित पाप पुण्य विनाश करते हैं । ब्रह्म वैवर्त्त में षड़ानन अगस्त्य मुनि से कहा, कि किसी का कोई ऐसा सूक्ष्म कर्म्म है जो अनुभव के योग्य नहीं उसी सूक्ष्म कर्म्म के फल से काशीवास करते हैं । जप यज्ञ तपस्यादि सम्पन्न मुनिगणों के अगम्य आप के भाग्य में सम्प्रति काशी सेवन नहीं है किसी का अति अल्प पुण्य क्या है जो नहीं जाना जाता हैं जिससे वह शरीर धारण करिके सदा काशी वास करते हैं, देवतादि कुगर्वित लोग क्षण मात्र भी काशी वास नहीं कर सक्ते । केवल शरणागत जीवों को तारक ब्रह्म उपदेश क-रते हैं और अन्य अभव्य को बाहर निकालदेतेहैं ।

जैसा अग्नि में सर्व्वदा दाहिका शक्ति रहती है तैसाही काशी में नियत मोचक शक्ति रहती है। जैसा पयोविहा मेघ माला से पतित जल विन्दु का प्रभाव से शक्ति मोती हो जाती है तैसाही काशी का प्रभाव से अन्त काल में जीवात्मा परमात्मा हो जाता है॥

पुण्यानि पापान्य खिला न्यशेषं सार्थं सवीजं सशरीर माद्यैं इहैव संहृत्य ददाति वोधं यतः शिवानन्द मवाप्नुवन्ति॥

निखिल अशेष प्रकार के पुण्य पाप का बीज फल सूल शरीर सहित इसी लोक में संहार करके अद्वैत आत्म तत्व ज्ञान प्रदान करती है जिससे जीव शिवानन्द की प्राप्ति होते है।

विनापि योगैः सहितोपि प्रापै मृतःप्रयान्त्येवहि यत्रतत्र मामेव निर्द्दग्ध समस्त दोषाः प्रयान्ति शुद्धं परमात्म रूपं।

यह अविमुक्त क्षेत्र के मध्य में योग अभ्यास विहिन पापात्मा जीव जिस किसी स्थान में प्राण त्याग करे सो समस्त दोष से मुक्त होकर मुझि में आकर परमात्म स्वरूप हो जाताहै॥

महात्मनां वापि तपोधनानां शापो मुनीना मपि यत्र भग्नः। तत् क्षेत्र मासाद्य महाद्युनद्या पिवन् पयोप्यत्र वसन् कृतार्थः॥

जिस स्थान में महात्मा तपस्वी मुनि गणों के शाप विनाश हो जाता है वह स्थान में वास करके पवित्र गंगाजल पान करने से कृतार्थ हो जाता है।

योगोऽत्र निद्रा क्रतवः प्रचाराः स्वेच्छाऽसनं देवि महा निवेद्यं। लीलात्मनो देवि पवित्रदानं जपः प्रजल्पः शयनं प्रणामः।

हे देवि यह स्थान में निद्रा योग, प्रचार व्यवहार समस्त कर्म्म यज्ञ स्वरूप, आपने इच्छा भोजन महान वेद्य और आत्म लीला पवित्र दान, वाक्य कथन जप, एवं शयन प्रणाम स्वरूप है।

मोक्षस्तु दुर्लभं मत्वो संसाराञ्चा[illegible] भीषणं अश्मनो चरणौ हत्वा वाराणस्यां वसेन्नरः॥

जन्म मरण रूप अति भयंकर संसार से मुक्त होना दुस्कर है इस लिये पाखाण अर्थात् पात्थर से पैर तोड़कर वाराणसी मे वास करना उचित है।

इदं कलियुगं घोरं संप्राप्ते पाण्डुनन्दन गति मन्यं न पश्यामि मुक्त्वा वाराणसीं पुरीं।

हे पाण्डुनन्दन घोर कलियुग उपस्थित अब वारानसी भिन्न निस्तार होने का और कोइ उपाय नहि देखने है।

जपध्यान बिहीनानां ज्ञान विज्ञान वर्जिनां तपस्युत्साह हीनानां गति वाराणसी नृणां।

जप ध्यान तपस्यादि सत् कार्म से रहिन और ज्ञान विज्ञान हीन अर्थात् तत्त्वमस्यादि महावाक्य विचार विहीन जीवोंके केवल वारानसी गतिमात्र अर्थात् और कोइ प्रकार से मुक्ति होने का उपाय नही हैं।

असत्यसिव्वारयति प्रवेशे कर्माणि जन्तो वरणा वरणया वाराणसी मध्य गतातयोश्च निः शेषमत्युपरता प्रभावात।

वरणा और असी के मध्य में वारानसीपुरी इस पुरी मे प्रवेश समय असि जीव गणो के समस्त कर्म्म विनाश करती है और वरणा निवारण करतीहै। वारानसी प्रवेश के अनन्तर उपर लिंग का प्रभाव से कर्म्म बीज अंकार नहीहोते है, प्रारब्ध कर्म भोगद्वारा क्षय होता हैं अर्थात् वारानसी प्रवेश समय असी और वरणा से संचित कर्म्म का नाश वारा नसी कृत कर्म्म उपर प्रभाव से नाश, प्रारब्ध कर्म्म भोग द्वारा विनाश, संचत क्रीयमाण प्रारब्ध इन तिन प्रकार कर्म्म के अभाव से वारानसी मृत जीवगणों के विदेह कैवल्य रूप निर्वाण मुक्तिमे कोइ संसय नहिहै क्योंकि कर्म्म बीज नरहने से देह उत्पन्न होनेका कारण नही रहता हैं

अनादि दुरयमाद्यंधाम वामाङ्कान्त सहिम रसिकंयत् स्वानुभूत्यैकमान। अनवरत मपास्त द्वैत आत्मावबोधं प्रकटयति पशूनां काल पाकेन काश्यां। जन्मान्तर सहस्रेषु मोक्षो लभ्येत

वा नवा दृष्टे वलभ्यतेनन्तो मुक्तिरेकेन जन्मना ॥

उमाकान्त के यह धाम मे अनादि उदय आदि अनुभूति आपने महिमा से पशूगण के काल पत्पािवा पूर्वक सदा इतभावनाय करिके अद्वैत आत्मतत्व ज्ञान प्रगटकरती हैं हजार जन्म यतन करने से जो मुक्ति लाभ होना दुस्कारहै सो यहां एकही जन्म में होता है ।

गर्भधानाद्यखिलमपि यत् कर्म्म जातं द्विजाना मेकंन्युनं मुनि मपिसुने पातयिष्यत्यवस्य । नोचेत् स्वर्गादिषुफलमिः सर्व्वशास्त्रे प्रसिद्धं तस्मात् काश्यां क्षयमपि नवसे दुद्धिमान मुक्ति सिद्धै ।

हेमुने, द्विजगण के निखिल कर्म्म संस्कार के मध्य मे एक भी कम होने से अवश्य करिके मुनिगणोंको भी पतन होती है सब शास्त्रो में लिखाहै । स्वर्गादि फल भोगके इस प्रकार नियम है, इस लिये मोक्ष प्राप्ति के कारण बुद्धिमान मनुष्यों के काशी मे वास करना उचित है ।

काशी श्रीमति सर्व्व कर्म्म शमनी स्वाभाविकी काचन प्रत्यक्षं तवशक्ति रस्ति महती मात र्मह मण्डले यत् सर्व्वत्र सदा वस न्नपि शिव स्त्वय्येव लब्धास्पदं बिश्वं तारयते विशेष विमुखः पारं भवाम्भो निधे।

सर्व कर्म्म शमनी श्रीमति माता काशीके यह धरणी मण्डल मे आप की ऐसी प्रत्यक्ष शक्ति है कि सर्व्वत्र व्यापमान शिव केवल आपकी महिमा से इसी स्थान मे समस्त जीव जन्तों को भवसागर से तर देते हैं । अर्थात् सर्व व्यापि शिव और कोइ स्थान मे ऐसी सहज से मुक्ति प्रदान नही करसक्ते ।

आब्रह्मणोऽनन्त भावेषु पुण्यं मद्भावनोपार्जित मल्प मल्पं तत्प्र- इसाद्यद्य विमुक्तमेकं कदाचिद्ध याति मम प्रसादात ॥

ब्रह्मा के शरीर से अनन्त देहमे मेरा भजन करके थोड़ा थोड़ा सञ्चित पुण्य फल से कदाचित कोइ एक जीव मेरा प्रसाद से अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र में आताहैं

तीर्थानि सर्व्वाण्यपि मोक्षदानि स्मृतानि सर्व्वेष्वखिलेषु

४ राजन् । वाराणसीं प्राप्य फलानि शीघ्रं काले न याते। व्यवधान वन्ति ॥

हे राजन, ब्रह्माण्ड में जो समस्त तीर्थ और मोक्ष की स्थिति है, तन्मध्य में वाराणसी आशु फल प्रदा है कालान्तर व्यवधान नहीं है।

यथाचार्य्यं त्रिपुर विजयी साधनानि चतुर्णां सम्पद्वास: सुलभ मशनं स्वैरचार स्तपांसि । श्रोतव्य च्च श्रुति रपि तप: श्रुयते जन्मभाजां काले काश्यां सुकृत धनिका स्तत्र वास लभन्ते ।

जिस काशीमें तीनों लोक विजयी त्रिपुरारि शंकर आचार्य्य अर्थात् उपदेशदाता गुरु और चारि प्रकारके साधन सम्पद, वास औ भोजन सुलभ, इच्छानुसार तपस्या अनायास श्रुतियोंका श्रवण काल प्राप्त सुकृत साधुगण एसीस्थान में वास लाभ करते हैं।

जन्मान्तर सहस्रेषु सञ्चितै : पुण्यकर्म्मभि : प्राप्ता वाराणसी रम्या प्रसादात् परमेश्वरात ।

हजार जन्म के संचित पुण्य कर्म्मों के फलसे परमेश्वर का प्रसाद से रम्या वरानसी धाम की प्राप्ति होता है।

ये काश्यां संशयाविष्ट मुक्तौतेषां शरीरिणां । प्राण प्रयाण समये प्रमाणं परमेश्वर : ॥

जो लोग काशी मुक्ति विषयमे संसय करतेहैं उन लोगों के प्राण वियोग समय मे परमेश्वर प्रमाण ।

मोक्षस्य निर्णय काश्यामिस्य मेकेन जन्मनासर्वेषा मेव जन्तुनां प्रमाणै: प्रतिपादितं ।

काशी सत्य समस्त जीवगणों के इस प्रकार से एकही जन्म में मुक्ति निर्णय प्रमाण द्वारा प्रति पादित होताहै

किं बहुक्तेन येन केनापि य: कश्चिन्निमित्तेन परित्यजेत्

काश्यां प्राणान् सर्वं जन्तुर्मुक्त इत्यवगम्यतां ॥

अधिक कहना क्या जो कोई जन्तु किसी प्रकार से काशी में प्राण त्याग करताहै सो मुक्त होजाताहै यह जाननाचाहिये

तावत पापानि जृम्भन्ते नाना जन्मार्जितान्यपि यावत् काशी नह्यतसंस्था पुनर्भवविनाशिनी

जे पर्यन्त पुनर्जन्म विनाशिनी काशी हृदयमें संस्थित नहीं होती है से पर्यन्त नाना जन्म जित पाप से नहीं मुक्त होते हैं

काशीस्मरण मात्रेण किंचिच्चं यदघं व्रजेत् गर्भवासोपिन श्येत् विश्वेशानुग्रहात परात

काशीजी को स्मरण करते ही जीव समस्त पाप से मुक्त होजाताहै एवं विश्वेश्वर का कृपासे जन्म मरणरूप अकथनिय दुःख निवृत्ति होजाताहै।

इति श्रीमत् परमहंस परिव्राजक श्रीसुरेश्वराचार्य्य बिरचित: सकल श्रुति स्मृति निद्धारित: काशीमोक्ष निर्णय काशी मुक्ति बिवरण समाप्त: ।

अविमुक्तं महाक्षेत्रं परं निर्वाण कारणम् क्षेत्राणां परमं क्षेत्रं मंगलानाञ्च मंगलम ।

जिस स्थान से सच्चिदानन्द विश्वगुरु ज्ञानदाता विश्वेश्वर कभी वियोग नहीं होताहैं सर्वदा विराजमान रहते हैं उसी को अविमुक्त कहतेहैं । यह अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र परम निर्वाण मुक्ति का कारण समस्त क्षेत्रों में परम क्षेत्र और समस्त मंगलों में परम मंगल है ॥

श्मशानानाञ्च सर्वेषां श्मशानं परमं महत । पीठानां परमं पीठ मूषराणां महोषरम ॥

समस्त श्मशानों से श्रेष्ठ श्मशान सम्पूर्ण पीठों से श्रेष्ठ पीठ, और सब उषरों से श्रेष्ठ उसर है।

धर्माभिलाषि बुद्धिनां धर्म्मराशिकरं परम्। अर्थ.र्थनां शिखि रथ परमार्थ प्रकाशकं ॥ कामिनां कामजननं मुमुक्षणांच मोक्षदम्। श्रुयते यत्रयत्रै ततत्र तत्र परमामृतम् ॥

यह स्थान धर्म्म मति साधुगणो के धर्म्म वृद्धिकर, अर्थाभिलाषि गणोंको पर माथ देने वाले, कामियोंका कामनां पूरा करनेवाला और मोक्ष चाहने वालों का मोक्ष दाता। जिसजिस स्थान मे इसका प्रसंग होता है वही स्थान परम अमृत तुल्य ज्ञान होता है।

कियंति संति तीर्थानि नेहऽक्षौणीतलेऽखिले परं काशीरजोमात्र तुलासाम्यं व्रतेष्वपि ॥

इस अखिल पृथ्वीतल मे जितने महातीर्थ है परंतु काशी जी का रज तुल्य भी नही है।

कियंत्यो न स्रवंत्योत्र रत्नाकर मुदावहाः। परं स्वर्ग तरंगिण्याः काश्यां का साम्यमुद्वहेत् ॥

धरती मे कितने सागर गामिनी नदी प्रवाहित है परन्तु काशी प्रवाहिणी सुरतरंगिणी गंगा जी का तुल्य कोइ नही है।

कियंति संति नोभूम्यां मोक्षं क्षेत्राणि यन्मुखं। परंमन्येऽविमुक्तस्य कोठ्यंशोपिनतेष्वहो ॥

मर्त्त लोक मे कितने मोक्ष क्षेत्र है किन्तु अविमुक्त वाराणसी क्षेत्र का कोटि अंस का एक अंस भी नही है।

गंगा विश्वेश्वरः काशी जागर्त्ति त्रितयं यतः। तत्र नैः श्रेयसीलक्ष्मी लभ्यते चित्र मत्र किम्

जिस स्थान मे गंगा, विश्वेश्वरः और काशी तीनों विराजित है, जंहा निर्वाण मुक्ति रुप लक्ष्मी लाभ होने का विचित्र क्या ॥

अथ मणिकर्णिका महात्म।

संसार सर्प दष्टानां जन्तूनां यत्र शंकरः । मपसव्येन हस्तेन व्रूते ब्रह्म स्पृश्मम् श्रुतिम् ॥ न कापिलेन योगेन न सांख्येन तपोव्रतैः । या गति प्राप्यते पुंभ तानं द.स्भांच भूरियम् ॥

वैकुण्ठे विष्णु भवने विष्णुभक्ति परायणाः । जपेयुः सततं मुक्तौ श्रीमती मणिकर्णिकाम् ॥ हुत्वाग्नि होत्र मपिच यावज्जीवं द्विजोत्तमाः । भन्ते श्रयंते मुक्तौ षां सेयं श्रीमणिकाम् ॥ वेदान् पठित्वा विधि वद्ब्रह्म यज्ञ रता भुवि । यां श्रयन्ति द्विजा मुक्तै सेयं श्रीमणिकर्णिका ॥ इष्टा क्रतूनपि मपा वह्नन् पर्य्यान दक्षिणाम् । श्रयंते श्रेयसे धन्या(प्राप्तेऽधि मणिकर्णिकाम् ॥ सीमन्तिन्योपि सततं पति व्रत परायणाः । मुक्तौ पति मनुत्रज्य श्रयन्ति मणिकर्णिकाम् ॥ वैश्यास्यपिच सेदन्ते न्यायोपार्जित सम्पदः । धनानि साधु सात् कृत्वा प्राप्ते श्र मणिकर्णिकाम् ॥ त्यक्त्वा पुत्र कलत्रादि सच्छूद्रा न्याय मार्गगाः । निर्व्वाण प्राप्तये चैनां भजेयु मणिकर्णिकाम् ॥ यावज्जीवं चरंतोपि ब्रह्मचर्यं जितेन्द्रियाः । निःश्रेयसे श्रयन्त्येनां श्रीमती मणिकर्णिकाम् ॥ भतिथानपि सन्तर्प्य पंच यज्ञ रतामपि । गृहस्थाश्रमिणो नेमां त्यजेयु मणिकर्णिकाम् ॥ वान प्रस्थाश्रमयुजो ज्ञात्वा निर्व्वाण साधनमं संनियम्येन्द्रियग्रामं मणिकर्णामुपासते ॥ अनन्य साधनो मुक्तिं ज्ञात्वा शास्त्रैरनेधा । मुमुक्षभिस्तैकदंडैः सेव्यते मणिकर्णिका ॥ दंडयित्वा मनोवाचं कायं नित्यं चिदण्डिनः । निःश्रेयसीश्रियंप्राप्तुं श्रयन्ते मणिकर्णिकाम् ॥ सन्न्यस्ताखिल कर्म्माणो दण्डयित्वा चलं मनः । एकदण्डव्रता मुक्तौ भजेयु मणिकर्णिकाम् ॥ शिखी मुण्डी जटी वापी कौपिनी वा दिगम्बरः । मुमुक्षुः को न सेवेत् मुक्तिदां मणिकर्णिकाम् ॥ तपः कर्तुं न शक्ता ये दानं वा दातु मक्षमाः । योगाभ्यास विहीना ये तेषा मेषा विमुक्तिदा ॥ सम्यु पायाः सहस्रं वै मुक्तये न तथा मुने । हेलयैषा यथा दद्यान्निर्वाणं मणिकर्णिका ॥ आनयन व्रत भृते भिक्षान्नभ्य वहारिणे । प्राप्ते दद्यात् समां मुक्ति मुभाभ्यां मणिकर्णिकाम् ॥ यथोक्त माचरेदेको निष्टा पाशुपतं व्रतम् । निरंतर इमरदेको हृदेनां मणि कर्णिकाम् ॥ द्वयोश्च वपुषः पाते द्वयोश्च सादृशी गतिः । तस्मात् सर्वं विहाय सेव्यैषा मणिकर्णिका॥

संसार रूपी सर्प से काटे हुये जन्तुओं को जिस स्थान में भगवान महादेव दहिने कान पर हाथ देकर तारक ब्रह्म महामंत्र उपदेश करते हैं। कापिल योग, सांख्य योग, और समस्त व्रतादि नियमों से जो गति लाभ होना दुस्कर सो गति यह मणिकर्णिका देती है॥

वैकुण्ठ में विष्णु भक्त गण मुक्तिके निमित्त सर्वदा जिस्का जप करके द्विजगण अग्निहोत्रादि यज्ञ करके, ब्राह्मणगण चारोंवेद अध्ययन करके और भूपतिगण असंख्य याग यज्ञों कर ब्रह्मणों को असंख्य दक्षिणा देकर अन्तकाल में जिस्का आश्रय करते हैं सो मणिकर्णिका यही है॥ पतिव्रत परायणा स्त्रियांभिपतिकी अनुगामिनी होकर, वैश्य गण न्यायोपार्जित धन को साधु सज्जन को दान कर और अच्छे शूद्रगण भी पुत्र परिवारों को छोडकर निर्वाण मुक्ति के लिये जिसका आश्रय करते हैं सो मणिकर्णिका यही है। जीवन प्रर्यन्त ब्रह्मचर्य्य मे रहने वाले जितेन्द्रिय लोग मोक्ष प्राप्ति के लिये जिसका आश्रय करते हैं सो मणिकर्णिका यही है। द्नां ११।

गृहस्थ लोग अतिथि सत्कार औ पंच यज्ञ करके इस मणिकर्णिका की सेवा नही त्याग करते हैं १२॥

वानप्रस्थवाले वनचारीतपस्वी इन्द्रियदमन करके मणिकर्णिका को निर्वाण मुक्ति साधन जानकर उपासना करते है। १३॥

मुमुक्षु गण, अर्थात् मोक्ष को चाहनेवाले मुक्ति लाभ का दूसरा उपाय नहीं नहीं है ऐसा शास्त्रों से जानकर मणिकर्णिका की सेवा करते। १३।

त्रिदण्डीगण शरीर मन और वाक्य इन तीनों का संयम करके मोक्ष लाभ के लिये मणिकर्णिका का आश्रय करतेहे एक दण्ड को धारण करनेवाले समस्त कर्मों को छोड़कर चंचल अन्तः करण को स्थिर करके मणिकर्णिका के आश्रित होते है।

जटी, मुण्डी, शिखी, औ कौपीनधारी अथवा दिगम्बर इन सभों मे से कौन नही मुक्ति के लिये मणिकर्णिका की सेवा करते हैं।

विज्ञापन ।

सब लोगों पर विदित हो कि हमलोगों ने सर्व्व साधारण के सुबिइते के लिये बनारस पांडे की हवेली में प्रभाकर यन्त्रालय नाम से एक छापाखाना खोला है । इसमें चेक, बिल, रसीद, और पुस्तक इत्यादि अंगरेजी, हिन्दि, उर्दु, और बंगला, भाषा में बहुत शीघ्र वो किफायत में और सफाइ के साथ छापी जाती हैं ॥

श्री भूतनाथ मुखोपाध्याय एंड को,

अध्यक्ष ।

पाकिस्तान के विदेश मन्त्री श्री जुल्फीकार अली भुट्टो ने सिंध विश्वविद्यालय में वक्तव्य देते हुए अपना वही पुराना राग 'पुनः अलापा कि पाकिस्तान के पास इसके सिवाय

सोना बरामद

बम्बई, ६ मई। केन्द्रीय कस्टम अधिकारियोंने आज यहां एक घरपर छापामारकर लगभग १॥ लाख रु० ...

शुरू होने के पहले दिन इलाहाबाद में गत २८ अप्रैल की उस घटना की गूंज सुनाई दी जिसमें लगभग आधा दर्जन गुण्डों के मेडिकल कालेज की दो छात्राओंका अपहरण कर उनका शीलभंग किया और उसके बाद उन्हें यमुना तट पर छोड़ दिया।

इस प्रसंग में कुछ विधायकों ने एक ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पेश करते हुए पुलिस पर आरोप लगाया कि उसकी 'आत्म तुष्टि' के कारण राज्य में अराजकता बढ़ रही है। जुए के अड्डे पुलिस और गुण्डे एक साथ मिल कर चला रहे हैं राज्य में पुलिस प्रशासन वस्तुतः रह नहीं गया है।

उपगृहमन्त्री श्री एस० पी० गुप्त ने कहा कि सरकार १२ मई को सदन में इस प्रश्न पर एक वक्तव्य देगी।

लखनऊमें छात्राओ के साथ छेड़खानी

विधान सभामें कतिपय विरोधी दल एवं कांग्रेस के विधायकों ने भी

प्रस्तावित इन्दिरा—टीटो—नासिर शिखर सम्मेलन के बारे में पूछे जाने पर आपने कहा कि अधिकृत रूप से मुझे कोई सूचना नहीं मिली।

छात्राओं लेकिन यदि इस तरह[?]नों में छेड़खानी की घटनाओं पर रोष एवं चिन्ता प्रकट की।

उपगृहमन्त्री श्री एस० पी० गुप्त ने कहा कि पुलिस को इस तरह की कोई शिकायत सुनने को नहीं मिली है फिर भी जिलाधिकारियों ने इस तरह की घटनायें न होने देने के लिए पर्याप्त प्रबन्ध कर दिया है।

प्रख्यात क्रांतिकारी
श्री अतुल कृष्ण घोष का निधन

कलकत्ता, ६ मई। बंगाल के सुविख्यात क्रान्तिकारी श्री अतुल कृष्ण घोष का ७६ वर्ष की आयु में परसों रात उनके निवास स्थान पर

आपात स्थिति के बारे में कानून संसद के इसी सत्र में

नई दिल्ली, ६ मई। गृहमंत्री श्री गुलजारी लाल नन्दा ने कल राज्यसभा में घोषणा की कि सरकार संसद के इसी अधिवेशन में एक कानून पास कर ऐसी व्यवस्था करेगी जिसमें आपात स्थिति जारी रहने पर भी किसी भी राज्य में भारत रक्षा नियम आदि व्यवस्थाओं का किसी प्रकार भी दुरुपयोग नहीं किया जा सकेगा।

सदन में श्री नन्दा ने देश में आपात स्थिति बनाये रखने के बारे में एक वक्तव्य देते हुए बताया कि सीमाओं की रक्षा के लिए इसके अन्तर्गत कुछ अधिकारों की अभी भी जरूरत है और चूंकि देश के कुछ भागों में ही आपात स्थिति रखने की व्यवस्था नहीं हो सकती, वह सारे देश में ही रहेगी। परन्तु व्यवहारिता में भारत रक्षा नियमों का प्रयोग केवल सीमा वर्ती राज्यों

टीटो-
सम्मेल
भारत सरक
अन्तरराष्ट्रीय त
राष्ट्रों की भूमि

नई दिल्ली, ६ मई ...
नासिर और युगोस्लावि...
स्वागत किया है कि ये ...
आपस में विचार-विनि...
यह प्रस्ताव कल संयु...

हारक...

जोशी मठ से ... लम्बी पट्टी का ... उद्घाटन के बा... गये।

जाड़े में बर्फ... उत्तर प्रदेश सरक... लिये रोडवेज बस... पहले यहां से ... दूरी (बद्रीनाथ) ... तय लेंगे।

र का पट खुला

ीनाथ की यात्रा
दिन में

हरिद्वार, ६ मई। ... वाली सड़क की ४७ किलोमीटर ...श्री चव्हाण ने उद्घाटन किया। ...र्थ यात्री बद्रीनाथ धाम पहुंच ...

...न्दिर के पट आज खुल गये। ...त्रियों को बद्रीनाथ ले जाने के ...कर दी है।

...दल १५ दिन में १२० कि० मी० ...लेकिन अब दो दिन में यह पूरी



[...र्वी उत्तरप्रदेश, बिहार तथा नेपाल में सर्वाधिक बिकनेवाला

...ख्या, १६ वाँ १८१]   वाराणसी, शनिवार संवत् २०२३

...सिर-इंदिरा शिखर ...अगले मास दिल्ली में

...रा प्रस्ताव का स्वागत

...टाने के लिए तटस्थ ...विचार होगा

...युक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति ...ति टीटो के इस प्रस्ताव का सहर्ष ...ल और श्रीमती इन्दिरा गांधी ...

...राज्य के राजदूत ने विदेश मन्त्रा- ...भेंट कर विधिवत सरकार को दिया।

...कुत्ते की दुम टेढ़ी

पंचवर्षीय योजना के स्थानपर वार्षिक योजना

नयी दिल्ली, ६ मई। अब यह बात निश्चित सी है कि देशकी चतुर्थ पंचवर्षीय योजना नामक कोई योजना नहीं बनेगी।

भारत सरकार तथा योजना आयोग देश की आगामी पांच वर्षों की विकास परियोजनाओं के लिए २ खरब १५ अरब रुपयों की वित्तीय व्यवस्था को ध्यान में रख करके अब सम्भवतया वार्षिक योजना बनायेगी।

इन्दिरा जी महाराष्ट्र के दौरे पर

औरंगाबाद, ६ मई। प्रधान मन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी आज प्रातः यहां पहुंचीं और महाराष्ट्र के सूखा ग्रस्त इलाकों में सहायता पहुंचाने के बारे में मुख्यमन्त्री श्री नायक और उनके सहयोगियों से विचार विनिमय किया।

इसके पूर्व संवाददाताओं से बातचीत करते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि महाराष्ट्र की खाद्य स्थिति विकट होते हुए भी नियन्त्रण में है। राज्य सरकार सहायता करना शुरू कर रही है और लोगों को अनाज पहुंचा रही है।

गोवा के भविष्य और महाराष्ट्र एवं मैसूर के सीमा विवाद के बारे में पूछने पर आपने कहा कि इस